DLHIN/25/A0564

काव्यशैली

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

YouTube

वर्ष : 02 | अंक : 13 | जून 2026

शिक्षा | साहित्य | कला | संस्कृति



मूल्य : 70/-



शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति

प्रबंध संपादक
रामश्याम 'हसीन'
संपादक
शैली भागवत 'आस'
सह-संपादक
सावित्री मलिक
कानूनी सलाहकार
अजय मिश्रा दबंग
संरक्षक
मंगल नसीम (दिल्ली)
लव कुमार प्रणय (अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)
रमेश शर्मा (चित्तौड़गढ़, राजस्थान)
संगीता अहलावत (बुलंद शहर)

सर्वाधिकार पत्रिका के स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक के पास सुरक्षित हैं।

स्वामी, प्रकाशक रामश्याम द्वारा आलम ग्राफिक्स से
डिज़ाइन एवं मुद्रक कलर एज आनंद पर्वत दिल्ली से प्रिंट होकर
RZ-149, मंगोलपुर खुर्द, दिल्ली-83 से प्रकाशित।

kavyashaily049@gmail.com | 7982407065

इस अंक में...

संपादकीय	शैली भागवत 'आस'	4
कविता का आदि-उत्स...	(काव्यशैली विशेष)	5
पर्यावरण विशेष - कविताएँ		
ऐसा कुछ खाओ	डॉ. कृष्णा मणिश्री	6
धरा का क्रंदन	डॉ. संगीता बिंदल	6
मत काटो तुम पेड़ को	शशि लाहोटी	7
पर्यावरण संरक्षण	मित्तल पियूष तिलवा	7
पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों का महत्व	कृष्णा गौतम	7
वृक्षों की महिमा	अनिल ओझा	8
वसुंधरा का आह्वान	डॉ. मिनल डोंगरे 'स्याही'	8
आओ पौधे लगाएँ...	जैन राजेंद्र गुलेच्छा 'राज'	9
पर्यावरण	लक्ष्मी कानोडिया	9
ग़ज़ल	ख़ीद अहमद शेख़ 'ख़ीद'	9
कुण्डलिया छंद	प्रत्यूष गौतम	9
इन दिनों में	ललितप्रसाद जोशी	10
तपन और धैर्य	डॉ. दिनेश प्रसाद सिन्हा	10
गर्मी अब आई है...	डॉ. विवेक कुमार तिवारी	11
प्रकृति और हमारा फ़र्ज़	पूर्णिमा सुमन	11
गर्मी का प्रकोप	दीपक सिंह जिम्मी	11
शिरीष	वी पी दिलेन्द्र	12
ग्रीष्मा का क़हर	सरला मेहता	12
वृक्षारोपण	ब्रजेंद्र शरण श्रीवास्तव 'मानव'	12
ग्रीष्म ऋतु	जयप्रकाश अग्रवाल	13
हथगोले सी धूप	राम नरेश 'उज्जवल'	13
लेख/लघुकथा/कहानी		
पर्यावरण संरक्षण (लेख)	बबिता उपाध्याय	14
परोपकार का फल (लघुकथा)	साधना शर्मा	15
हौसले की मौत (लघुकथा)	राम मूरत 'राही'	16
योग, भगाए रोग (लेख)	राजेश्वर गुप्त	17
एक पाती स्वयं के नाम (लेख)	लता अग्रवाल	19
आगरा की सैर (आपबीती)	महेंद्र तिवारी	20
अनूठे प्रेम की अधूरी दास्तान (कहानी)	डॉ. सूर्य प्रताप राव	24
जीवनशैली सादगीपूर्ण हो... (लेख)	जगदीश शर्मा 'सहज'	28
पुण्य (लघुकथा)	रवि प्रकाश केशरी	28
आभार	डॉ. सावित्री मलिक	29
काव्यशैली साहित्य सम्मान समारोह		30
पुस्तक समीक्षा ''स्त्री और प्रेम''	पल्लवी रानी	32
ग़ज़ल/कविता		
ग़ज़ल	सरोज कुमार वर्मा	34
बिखर रही है ज़िंदगी	कर्नल डॉ. राहुल शर्मा	34
सोचती हूँ क्या है ये जीवन...	सारिका प्रीतम	34
विदेश की सैर	पुष्टी अग्रवाल 'परी'	35
गीत	शीला चंदन	35
गीत	'रुद्राणी' पूनम शर्मा	36
एक बेटी की आवाज़	अंकिता जैन अवनी	36
माँ की महिमा	डॉ. साधना अग्रवाल 'साधिका'	37
आहिस्ता चल ऐ ज़िंदगी	पूनम भटनागर	38
संकल्प	त्रिलोक सिंह ठकुरेला	38
अंदर कुटिल कलियुग	डॉ. हरीश व्यास	38
अगर पिता होते...	मुकेश कुमार बिस्सा	39
कमाल करती माँ	नलिन खोईवाल	39
प्रतिक्रियाएँ		41
तेरी झील सी आँखों की जादूगरी...(कविता)	डॉ. सूर्य प्रताप राव	42
काव्यशैली सदस्यगण		42

पत्रिका में प्रकाशित कोई भी जानकारी व विचार लेखकों के अपने हैं इनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
काव्यशैली पत्रिका में प्रकाशित किसी रचना/समाचार/आलेख से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस सामग्री का किसी भी तरह से प्रयोग (छाया प्रति/तथ्य/सामग्रीगत) भारतीय कॉपी राइट एक्ट के तहत दण्डनीय अपराध है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र दिल्ली राज्य होगा।

काव्यशैली मासिक पत्रिका में सभी पद अवैतनिक हैं।



संपादकीय

प्रिय रचनाकारों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'काव्यशैली' ने अपनी वार्षिक यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण कर ली है। इसी माह दिल्ली में प्रतिष्ठित साहित्यसेवियों और प्रबुद्ध सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति में 'काव्यशैली' का वार्षिक समारोह संपन्न हुआ। इतने अल्प समय में साहित्य और शिक्षा जगत की महान विभूतियों का हमसे जुड़ना इसलिए संभव हो पाया, क्योंकि 'काव्यशैली' मात्र एक पत्रिका नहीं, बल्कि सार्थक साहित्य को सहेजने का एक ईमानदार प्रयास है। इसकी शुरुआत इसी पवित्र उद्देश्य के साथ की गई थी कि साहित्य और शिक्षा के माध्यम से हम अपनी कला और संस्कृति को संरक्षित व पल्लवित कर सकें।

'काव्यशैली' के माध्यम से हमने स्थापित रचनाकारों व गज़लकारों के साथ-साथ नवोदित प्रतिभाओं की रचनाओं को भी मंच देना प्रारंभ किया। आरंभिक चरण अत्यंत चुनौतीपूर्ण था, किंतु हमें दृढ़ विश्वास था कि समय के साथ इसकी स्वीकार्यता अवश्य बढ़ेगी। आज अत्यंत हर्ष का विषय है कि मात्र एक वर्ष के अल्प अंतराल में ही इस पत्रिका ने देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है। वर्तमान में देश के कोने-कोने से वरिष्ठ एवं उदीयमान कलमकारों की रचनाएँ हमें निरंतर प्राप्त हो रही हैं, साथ ही वैश्विक पटल पर भी प्रवासी हिंदी साहित्यप्रेमी इस मुहिम से जुड़ रहे हैं। अब तक 200 से अधिक रचनाकारों को पत्रिका में ससम्मान स्थान मिल चुका है। सांगठनिक विस्तार की दृष्टि से दिल्ली और उत्तर प्रदेश इकाइयों के साथ-साथ अब मध्य प्रदेश की इंदौर इकाई भी पूर्ण सक्रियता से कार्य कर रही है। विभिन्न विषयों पर केंद्रित विशेषांकों के प्रकाशन के साथ ही, विगत वर्ष हमने दिल्ली और इंदौर में काव्य-गोष्ठियों का भी सफल आयोजन किया है।

अभी तो बस शुरुआत है, आगामी वर्षों में इसकी गुणवत्ता में सुधार करना और काव्य विधाओं, गद्य विधाओं, कला और संस्कृति से जुड़े आयोजनों की अलग-अलग शहरों में कार्यक्रमों की योजना है।

जून का यह अंक पर्यावरण के प्रति मानव की संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति से सुसज्जित है और ग्रीष्म के क़हर को भी व्यक्त कर रहा है। उत्साह से अपनी रचनाओं से काव्यशैली के इस अंक में प्रकाशित सभी कलमकारों को हार्दिक बधाई।

काव्यशैली हम सबका साझा मंच है

आपका अपना मंच है

आइए....

शब्दों की इस पावन यात्रा में साथ चलें, साथ बढ़ें....

शैली भागवत 'आस'

सम्पादक

काव्यशैली

कविता का आदि-उत्स और ऐतिहासिक संचलन: आदिम चेतना से समकालीन यथार्थ तक



पिछले अंक से आगे....

वैचारिक विस्तार : कविता दो मुख्य धाराओं में विभाजित हुई।

निर्गुण धारा : कबीर की साखियों में सामाजिक रूढ़ियों पर तीखा प्रहार था, तो जायसी के 'पद्मावत' में सूफी प्रेमाख्यान का रहस्यवाद।

सगुण धारा : तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के माध्यम से कविता को लोक-मर्यादा और सामाजिक सुसंगति का शास्त्र बनाया, जबकि सूरदास ने कृष्ण-लीला के माध्यम से वात्सल्य और श्रृंगार को चरम पर पहुँचाया।

रीतिकाल (दरबारी विलासिता और कलात्मकता का उत्कर्ष)

परिवेश : भक्तिकाल का लोक-उन्मुख विमर्श पुनः सामंती विलासिता की ओर मुड़ा।

शिल्पगत चमत्कार : कविता यहाँ जनसरोकार से कटकर केवल लक्षण-ग्रंथों के निर्माण, श्रृंगारिक नख-शिख वर्णन और चमत्कार प्रदर्शन (जैसे बिहारी के दोहे) तक सीमित हो गई। घनानंद जैसे कवियों ने इस दौर में भी 'पीर की अनुभूतियों' को जीवित रखा।

आधुनिक काल (यथार्थवाद, वैचारिकता और खड़ी बोली का उदय)

नवजागरण और भारतेंदु-द्विवेदी युग : कविता में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली की प्रतिष्ठा हुई। भारतेंदु और मैथिलीशरण गुप्त ने कविता को राष्ट्रीय चेतना और अतीत के गौरव से जोड़ा।

छायावाद (वैयक्तिक अस्मिता का उदय): प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी ने कविता को निजता, प्रकृति-रहस्य और सूक्ष्म आंतरिक अनुभूतियों से समृद्ध किया।

प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता : मार्क्सवादी चेतना से प्रभावित होकर नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल ने कविता को शोषितों की आवाज़ बनाया। वहीं, अज्ञेय के 'तार सप्तक' (1943) ने प्रयोगवाद और नई कविता की नींव रखी, जहाँ कविता व्यक्ति-मन के यथार्थ, क्षण-बोध और नए बिंबों की खोज में प्रवृत्त हुई।

समकालीन कविता : 21वीं सदी के सरोकार और चुनौतियाँ

आज की कविता (उत्तर-आधुनिक और समकालीन दौर) किसी एक 'वाद' से बंधी नहीं है। यह बहुआयामी और विकेंद्रीकृत है।

हाशिए का विमर्श : समकालीन कविता में अब राजाओं, देवताओं या मध्यवर्गीय पुरुषों की प्रधानता नहीं है। आज की कविता स्त्री विमर्श, दलित विमर्श और आदिवासी चेतना के माध्यम से हाशिए के समाज के दुख, अस्मिता और प्रतिरोध को दर्ज कर रही है।

गद्यात्मकता और यथार्थ : आज की कविता छंद-मुक्त ही नहीं, बल्कि कई बार पूरी तरह गद्यात्मक है। अज्ञेय और मुक्तिबोध से होती हुई कविता आज रघुवीर सहाय, धूमिल और आलोकधन्वा के रास्ते अत्यंत यथार्थवादी और राजनीतिक हो चुकी है।

डिजिटल स्पेस की चुनौती : मुद्रित पत्रिकाओं से निकलकर कविता आज सोशल मीडिया और 'इंस्टा-पोएट्री' के दौर में है। यहाँ कविता की पहुँच तो बढ़ी है, लेकिन उसकी साहित्यिक सघनता, भाषा की बंकता और वैचारिक गहराई के सामने एक बड़ा संकट भी खड़ा हुआ है।

21वीं सदी की समकालीन कविता परंपरा के बने-बनाए ढांचों को तोड़कर एक नए भाषाई और वैचारिक रूप में हमारे सामने खड़ी है। आज की कविता के सरोकार केवल प्रकृति या प्रेम तक सीमित नहीं हैं। बल्कि वे आज के जटिल इंसानी जीवन की परतों को खोलते हैं। इस सदी की कविता में भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद और उपभोक्ता संस्कृति के गहरे प्रभाव साफ देखे जा सकते हैं। जहाँ इंसान हर दिन मशीनों और तकनीक के जाल में उलझता जा रहा है। सोशल मीडिया और डिजिटल क्रांति ने अभिव्यक्ति को आसान तो बनाया है, लेकिन इसने मानवीय संवेदनाओं और आपसी रिश्तों में एक अजीब सा अकेलापन और बिखराव भी पैदा किया है। समकालीन कवियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती इस आभासी दुनिया के बीच असली इंसानी दर्द, हाशिए के समाज (जैसे दलित, आदिवासी और स्त्री) की आवाज़ों और पर्यावरण के संकट को अपनी रचनाओं में ईमानदारी से जगह देना है। आज का आधुनिक काव्य-रूप छंदों के बंधनों से पूरी तरह मुक्त होकर बोलचाल की गद्यात्मक भाषा के करीब आ गया है। यह रूप कविता को और अधिक यथार्थवादी और धारदार बनाता है। लेकिन इसके साथ ही कविता के सामने अपने 'काव्यात्मक सौंदर्य' और 'गंभीरता' को बचाए रखने की भी एक बहुत बड़ी चुनौती है, क्योंकि आज की तेज़ रफ्तार दुनिया में पाठकों का ध्यान खींचे रखना और बाज़ार के दबावों के बीच कविता की सार्थकता को बनाए रखना बेहद मुश्किल होता जा रहा है।

ऐसा कुछ खाओ

(प्रकृति संतुलन)

ऐसा कुछ खाओ ऐसा पकाओ
धरती से आए धरा में मिल जाए....
गेहूं खाओ मक्का उगाओ
रागी पर थोड़ा ज़ोर लगाओ
चावल की है बनती इडली
दालों की फेहरिस्त बनाओ

धरती हमारी माता जैसी
मिलकर सब सम्मान बढ़ाओ
उसको ना दूषित हम सब करें
ऐसे जीने की आदत बनाओ
ऐसा कुछ खाओ ऐसा पकाओ

टमाटर, लौकी, भिंडी, मूली
साथ हैं उगते जैसे हमजोली
गोभी, मटर और आलू प्यारा
साथ में इनको खूब पकाओ

सेब और केले, आम भी अच्छे
अंगूर, पपीते सब हैं सच्चे
तरबूज़, अनानास कच्चे-पक्के
खाकर छिलके बीज गिराओ
ऐसा कुछ खाओ ऐसा पकाओ

सबका कचरा मिल जाता है
धरती में सब खो जाता है
ऑर्गेनिक खाद बनाता है
ऐसे खाने को ही अपनाओ

जो भी खाओ खुद से उगाओ
कचरे का भी खाद बनाओ
पर्यावरण के हम ही हैं रक्षक
ऐसी जुगत कुछ रोज़ लगाओ
ऐसा कुछ खाओ ऐसा पकाओ....
ऐसा कुछ खाओ ऐसा पकाओ
धरती से आए धरा में मिल जाए....



डॉ. कृष्णा मणिश्री
मैसूर, कर्नाटक

धरा का क्रंदन

सुनो सुनो ओ मानव सारे, संकट में हैं नदी-किनारे।
हरी-भरी यह धरती अपनी, मत छीनो इसके नज़ारे।

काट रहे जो तुम जंगलों को, साँसें अपनी घटा रहे हो।
कॉन्क्रीट के ऊँचे जंगल, तुम खुद के लिए बना रहे हो।

नदियाँ रोतीं, सागर रोते, दूषित सारा पानी है।
अगर न जागे समय रहते, तो लिखी विनाश की कहानी है।

धरती का तापमान बढ़ रहा, ग्लेशियर सब पिघल रहे।
मौसम का मिज़ाज बदला है, जीव-जंतु सब तड़प रहे।

बंद करो यह अत्याचार, प्लास्टिक का बहिष्कार करो।
स्वच्छ हवा और निर्मल जल का, मिलकर सब सत्कार करो।

एक पेड़ तुम आज लगाओ, उसकी रक्षा का संकल्प करो।
आने वाली पीढ़ी के हित, प्रदूषण का तुम अंत करो।

सोख रही है धूप धरा को, ओज़ोन में भी छेद हुआ।
पंछी भूल गए हैं चहकना, मानव का मन श्वेत हुआ।

बूँद-बूँद पानी की क़ीमत, इसको व्यर्थ बहाओ मत।
कूड़ा-कचरा इधर-उधर फेंक, धरती को बीमार बनाओ मत।

सौर ऊर्जा को गले लगाओ, बिजली की भी बचत करो।
पर्यावरण बचे हमारा, दिन-रात यही तुम जतन करो।

जब तक होगी हरियाली, तब तक ही यह जीवन है।
आओ मिलकर कसम ये खाएँ, सुरक्षित रखना पर्यावरण है।



डॉ. संगीता बिंदल
पूना

पर्यावरण विशेष

दोहे

मत काटो तुम पेड़ को

मत काटो तुम पेड़ को, पाखी का यह वास।
प्राणवायु देते यही, जीव-जन्तु की आस।

हरियाली भाती सदा, देती मन को मोद।
बालक को ज्यों थामती, माता अपनी गोद।

औषध मिलती पेड़ से, हरते तन की पीर।
शरद रात्रि जैसी बने, अमृत तुल्य वो खीर।

पेड़ों से धरती सजे, ज्यों नारी श्रृंगार।
शोभा नहीं बिगाड़िये, करो न इस पर वार।

मूढ़ आज मानव हुआ, भूला बचपन काल।
चला काटने वृक्ष को, झूला जिसकी डाल।



शशि लाहोटी
कोलकाता

पर्यावरण संरक्षण

आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल
ज़रूरी जीवन के लिए हर पल
हानि पहुँचा रहे हैं हम आज-कल
किया दूषित नदी का मीठा जल
काट दिए पेड़ जो देते मीठा फल
प्लास्टिक का उपयोग बना सरल
यहाँ-वहाँ कचरा डाल
मैला किया धरती माँ का आँचल
बिन मौसम बरसात और बादल
गर्मी से हो हाल बेहाल
भूकंप, तूफान, आग में लपटें जंगल
आओ करें एक पहल
सुरक्षित करें हमारा कल
पेड़ लगाएँ और बचाएँ जल।

मित्तल पियूष तिलवा
वडोदरा

पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों का महत्व

दस पुत्रों के सम विटप, रखें हमारा ध्यान।
छाल, गोंद, फली, फूल, फल, छाया पिता समान।।

प्राण वायु प्रतिपल मिले, शीतलता की खान।
ऋषियों की तप स्थली, पूजा का स्थान।।

पीपल में विष्णु बसें, औषधियों का स्रोत।
मौली बाँध अर्चन करो, दूर करें सब शोक।।

नीम गुणों की खान है, त्वचा रोग हों दूर।
पत्ते चार चबाइये, मिलें लाभ भरपूर।।

बरगद, पिलखन, आम के, सभी वृक्ष उपहार।
प्रकृति ने देकर इन्हें, किया बहुत उपकार।।

पर्यावरण हरा भरा, मन को बहुत सुहाय।
मोर कोकिला डाल पर, निज-निज राग सुनाय।।

शुक आकर कलरव करें, गायें अपना राग।
रंग बिरंगी तितलियां, पीतीं मधुर पराग।।

फूल फलों से लदे हुए, पुहुप हमारे प्राण।
इनमें भी जीवन निहित, करते हैं कल्याण।।

अति सुंदर वातावरण, दीर्घायु को जान।
पेड़ों को मत काटिए, ये हैं देव समान।।

जल पीकर होते ख़ुशी, देते अभय वरदान।
बिन आवश्यक कार्य के, मत लो इनकी जान।।

पूजा कथा विवाह में, नमन करो शतवार।
क्षमा याचना कीजिए, तब लाओ निज द्वार।।

चतुर्मास में तोड़ना, माना गया निषिद्ध।
तरु देवों के देव हैं, कार्य करें सब सिद्ध।।

रोते हँसते झूमते, करते हैं मिल बात।
खड़-खड़ की आवाज़ कर, मिलते झुलते पात।।

ये भी गिरकर क्षीण हो, खो देते निज देह।
सूखी लकड़ी रूप में, छोड़ देते स्नेह।।

कृष्णा गौतम
ग्रेटर नोएडा, उ. प्र.

पर्यावरण विशेष

वृक्षों की महिमा

लेते हैं संकल्प वृक्ष नहीं, काटेंगे न कटाएंगे।
अपनी-अपनी माँ के नाम पर, पौधा एक लगाएंगे।।
वृक्षों की रक्षा की चेतना, जन-जन में फैलाएंगे।
अपनी-अपनी माँ के नाम पर, पौधा एक लगाएंगे।।

तपन भरी राहों के पंथी, शीतल छाया पाते हैं।
इनकी शाखाओं पर पंछी, कलरव मधुर सुनाते हैं।।
खट्टे-मीठे स्वाद, रस भरे, फल वृक्षों से मिलते हैं।
रंग बिरंगे और सुगंधित, फूल इन्हीं पर खिलते हैं।।
इन खिलते फूलों की ख़ुशबू, घर-घर में फैलाएंगे।
अपनी-अपनी माँ के नाम पर, पौधा एक लगाएंगे।।

वृक्ष रोकते भूमि क्षरण को, वृक्ष ही वर्षा लाते हैं।
जब बरसे रिमझिम फुहार, तो मन-मयूर हर्षाते हैं।।
उमड़-घुमड़ कर काले मेघा, जब-जब जल बरसाते हैं।
सरित सरः नव जीवन पाते, वन-उपवन मुस्काते हैं।।
भूरक्षक-जलदाता वृक्षों, को हम गले लगाएंगे।
अपनी-अपनी माँ के नाम पर, पौधा एक लगाएंगे।।

करते हैं श्रृंगार धरा का, वृक्ष हैं इसके आभूषण।
शुद्ध करे वायुमंडल को, दूर करते नित प्रदूषण।।
ताप नियंत्रित करें धरा का, कर Co2 का शोषण।
मूक दाता बन कर करते हैं, जैव जगत पालन पोषण।।
वृक्ष विभूषित होती वसुधा, इसको और संवारेंगे।
अपनी-अपनी माँ के नाम पर, पौधा एक लगाएंगे।

सारे जहाँ में यहाँ-वहाँ, वृक्ष ही लाते हरियाली।
वृक्ष ही लेकर आते हैं, मानव जीवन में ख़ुशहाली।।
धरती को हम चमन मान लें आओ बन जाएं माली।
वृक्ष लगाएं, वृक्ष बचाएं, फिर ये कैसे हो ख़ाली।।
वृक्ष सुरक्षा का सन्देश अब, जन-जन में पहुंचाएंगे।
अपनी-अपनी माँ के नाम पर, पौधा एक लगाएंगे।



अनिल ओझा
इंदौर

वसुंधरा का आह्वान

मैं हूँ वसुंधरा, युगों की मौन कहानी हूँ,
सृष्टि के प्रथम स्वप्नों की अमिट निशानी हूँ।
मेरे आँचल में पनपे जीवन के मधुर विहान,
मेरी धड़कन से गूँजा था सारा यह जहान।
पर आज मेरी आँखों में वेदना का नीर है,
अपने ही अंशों से मिला यह कैसा तीर है।

कल तक जो अरण्य मेरे मस्तक का मुकुट थे,
पक्षियों के कलरव से सजे हुए स्वरपुट थे।
लोभ की आँधी ने उन्हें क्षण में उजाड़ दिया,
स्वार्थ के हाथों हरियाली का संसार दिया।
हर कटता वृक्ष मानो मेरा प्राण हर लेता है,
मेरा मौन क्रंदन गगन तक जाकर रो लेता है।

धुएँ ने सूरज की किरणों को धूमिल कर डाला,
विषाक्त हवाओं ने जीवन का स्वर ही छीन डाला।
नदियाँ अश्रु बन बहती हैं, सागर व्याकुल हैं,
मेरे कण-कण में आज विनाश का बादल है।
जिस प्रगति पर मानव को इतना अभिमान हुआ,
वही मेरे अस्तित्व का सबसे बड़ा श्मशान हुआ।

यदि सचमुच मेरी पीड़ा का उपचार करना है,
तो वृक्ष लगाकर हर आँगन को गुलज़ार करना है।
जल, वन और वायु का आदर-सम्मान करना होगा,
प्रदूषण के हर स्रोत का परित्याग करना होगा।
प्रकृति के संग चलने का फिर संकल्प जगाना होगा,
फिर मेरे घायल आँचल में नव-वसंत लाना होगा।

अंतिम साँसों तक मैं तुमको पुकारूँगी,
अपने घावों में भी आशा के दीप उतारूँगी।
एक वृक्ष लगाओ तो मैं फिर से मुस्काऊँगी,
निर्मल जल और शीतल पवन का गीत सुनाऊँगी।
मुझको बचा लोगे तो कल का सवेरा बचेगा,
धरा बचेगी तभी मानव का बसेरा बचेगा।



डॉ. मिनल डोंगरे 'स्याही'

पर्यावरण विशेष

आओ पौधे लगाएँ..

हरीतिमा से आच्छादित
इस धरती को आओ सजाएँ,
अपने हाथों से जीवन में
हम भी कुछ पौधे लगाएँ..!

फूल भी देंगे, फल भी देंगे
देंगे तुझको शीतल छाया,
स्वच्छ करेंगे वातावरण को
अद्भुत होती वृक्ष की माया..!

आम, अमरूद, केला, जामुन
हम सब भला कहाँ से खाते,
अगर कोई भी इंसान इन
पेड़ों को कभी नहीं उगाते.!

प्राणवायु के संवाहक ये
पर्यावरण के रक्षक हैं,
स्वार्थवश इन्हें काटकर
मानव बन रहा भक्षक है.!

प्रकृति ने दिया है अब तक
अब आई हमारी बारी है,
पौधे रोपकर अपने कर से
फिर से सजानी क्यारी है..!

आओ हम मिलकर प्रण करें
पेड़ अनेक लगाएँगे,
आने वाली भावी पीढ़ी की
दुनिया सुंदर सजाएँगे..!



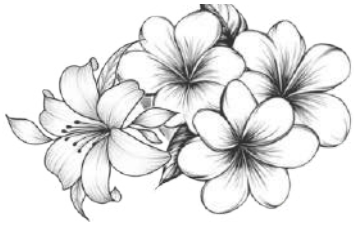
जैन राजेंद्र गुलेच्छा 'राज'
बैंगलोर

पर्यावरण

प्रकृति का अनुपम उपहार है,
यह धरती, अम्बर, जलधार है।
पेड़-पौधों से जीवन महके,
इनसे ही सारा संसार है।
नदियाँ कल-कल गीत सुनातीं,
पर्वत देते हैं आधार।
शीतल पवन संदेश सुनाती,
रखो प्रकृति का तुम सत्कार।
लोभ में आकर वृक्ष काटे,
नदियों को दूषित कर डाला।
धुएँ के काले बादल छाए,
मानव ने संकट को पाला।
बढ़ता जाता ताप धरा का,
सूख रहे हैं जल के स्रोत।
यदि अब भी न चेते मानव,
भोगेगा वह दुख और खेद।
आओ मिलकर प्रण यह लें हम,
हर वर्ष नए पौधे लगाएंगे।
जल, जंगल और ज़मीन बचाकर,
हरियाली फिर से लाएंगे।
स्वच्छ रहे पर्यावरण हमारा,
यही सभी का हो अभियान।
प्रकृति सुरक्षित होगी जब ही,
सुरक्षित होगा मानव-प्राण।



लक्ष्मी कानोडिया
खुर्जा,उत्तर प्रदेश



ग़ज़ल

पर्यावरण सहेजें पर्यावरण बचाएँ।
अपनी वसुंधरा को अब स्वर्ग हम बनाएँ।

क्यों कम हरीतिमा का विस्तार हो रहा है,
लघु वाटिका लगा कर परिसर सभी सजाएँ।

आरी चले न कोई वट-वृक्ष हो कि चन्दन,
सर्वत्र ही धरा पर अभियान यह चलाएँ।

संकल्प लें कि पौधारोपण करेंगे हम सब,
परिवार और मित्रों को याद नित दिलाएँ।

मिलती सदैव पादप से प्राण वायु हमको,
यह तथ्य हम सभी को संसार में बताएँ।

बाहुल्य हो वनों का आधिक्य उपवनों का,
भू पर बढ़ा प्रदूषण आओ इसे घटाएँ।

जग यह 'रशीद' अपना अविरल हरा-भरा हो,
पौधे यहाँ लगाकर कुछ याद छोड़ जाएँ।



रशीद अहमद शेख़ 'रशीद'

कुण्डलिया छंद

तरुवर से ही प्राण हैं, तरुवर से ही नीर।
तपती धरिणी शांत हो, हरे सकल भव पीर।।
हरे सकल भव पीर, मेघ ये जल भर लाते।
मीठे फल अरु फूल, सभी के मन को भाते।।
कहते हैं 'प्रत्यूष', सृजन ईश्वर का सुंदर।
सदा रखो यह याद, परम पावन हैं तरुवर।।



प्रत्यूष गौतम
बिहार





इन दिनों में

कल तक मेरे संकेतों पर घूमने वाले सभी यंत्र
आज अभी चुप्पी साधे बैठे हैं।

समय की एक नई परिभाषा के स्थान पर,
इन अंकित स्मृतियों में–
मेरे अस्तित्व के कल-पुर्जे क्षीण हो चुके हैं।

उन प्रारंभिक धात्विक गतिविधियों से
दूरी तय करने वाली मेरी समस्त शक्तियाँ,
आज ब्रह्मांड के इस छोटे-से कमरे में
मेरी उत्पन्न जड़ता को स्पष्ट देख पा रही हैं।

मेरी बाहों से बहने वाली चुंबकीय शक्तियाँ
अब किसी दीवार का सहारा लेते हुए,
एक कमरे से दूसरे कमरे की दूरी तय करने में
कई बार विफल हो जाती हैं।

बैसाखियों का सहारा–
एक पदक और उपाधि से अलंकृत करने का यह यत्न,
मेरी अभी तक की सभी गतिविधियों में
मुझे स्वयं के सबसे निकटतम लाने का प्रयास है।

मेरे भीतर के श्रम की गंध
अब बँट चुकी है।

इन आधुनिकता के चश्मों की फ्रेम में
एक तस्वीर बनकर,
कमर से लिपटी बेल्ट में–
सर्प की तरह जकड़ती हुई गंध
कुछ विद्यमान है।

व्हीलचेयर के पहियों में
पृथ्वी की तरह घूमती हुई,
गंध अभी भी छटपटाहट में
कुछ दूरी तय कर रही है।

और कुछ गंध अभी भी शेष बची है–
मेरे मस्तिष्क में जीवित,
जो किसी ओर से आने वाली विपदा के लिए
मेरे साथ खड़ी है।



ललितप्रसाद जोशी
छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)

तपन और धैर्य

धधक उठा नभ, सूरज प्रचंड हुआ,
धरती का हर कण मानो अग्निकुंड हुआ।
लू के थपेड़ों से तन सब झुलस गया,
पथिक भी छाँव की खोज में व्याकुल हुआ।

नदियाँ भी अब मानो मौन हो गईं,
हरी-भरी वादियाँ सब निस्तब्ध हो गईं।
प्यास से तड़पते पंछी नभ में भटके,
नीर की आश में मन भी नम हुआ।

आमों की बगिया में सुगंध समाई,
कच्ची कैरी ने फिर मिठास जगाई।
गाँव के आँगन में कुल्फी की चाहत,
मटके के जल से जीवन तृप्त हुआ।

रेतों पर चलते हुए पाँव जलते,
सूरज के तेवर दिन-ब-दिन बदलते।
फिर भी किसान खेतों में डटा रहा,
आशा के दीपक मन में दृढ़ हुआ।

दोपहर की चुप्पी सब कुछ सुनाती,
छतों पर तपन की लहरें लहरातीं।
साँझ ढले जब हवा मुस्कुराती,
थोड़ी-सी ठंडक से जीवन सुखद हुआ।

ग्रीष्म भी जीवन का एक रूप निराला,
संघर्ष के बाद ही मिलता उजियारा।
तप कर ही सोना निखरता जग में,
धैर्य ही देता जीवन सफल हुआ।



डॉ. दिनेश प्रसाद सिन्हा

पर्यावरण विशेष

गर्मी अब आई है...

जीव-जंतु सब प्यासे घूमे,
सूरज ने आग लगाई है।
ताल-तलैया सूख गए सब,
भीषण गर्मी अब आई है।।

सभी बड़े हैं दुबके घर में,
सब बच्चे घूमें बाग-बगीचे।
आम पकें पाने की ख़ातिर,
सदा आस लगाए बैठे नीचे।।

लू का डर न ज़रा भी उनको,
खेले-कूदे, घूमे दिन भर।
मम्मी कहतीं, ''बाहर न जाओ,
धूप बहुत है, बैठो घर पर''।।

कुल्फीवाले की घंटी बाजे,
धुन सुन बाहर दौड़े आते।
दादा-दादी से पैसे ले-लेकर,
गिन-गिन कुल्फी ख़ूब खाते।।

दोपहरी में बाहर जाने को,
धीरे से किवाड़ जब खोलते।
मम्मी की नींद खुल जाती तो,
मजबूरी में फिर से सो लेते।।

सही समय जब शाम का आए,
जाकर बाहर ख़ूब उछलते खेलते।
शाम ढले जब घर को लौट आते,
खा-पीकर फिर थे कहानी सुनते।।

पहले जब भी गर्मी आती थी,
मन को सबके ख़ूब भाती थी।
मेल-जोल भी ख़ूब बढ़ता था,
नाना-नानी की याद आती थी।।

पेड़-पौधे ख़ूब अब कट रहे हैं,
गर्मी के दिन भी इसलिए बढ़ रहे हैं।
खेल-कूद भी मुश्किल हो गया अब तो,
पंखे में भी पसीने से तर हो रहे हैं।।

अब, जब भी गर्मी आती है,
गरीबों की चिंता बढ़ाती है।
अमीर चले जाते हिल स्टेशन,
बिन बिजली गरीब की, दुर्गति हो जाती है।।

सोचो, समझो, नेक काम करो,
वृक्षारोपण का श्रेष्ठ अभियान करो।
वृक्ष लगाकर जिसने धरती सजाई है,
उसी ने अपनी, गर्मी सुखद बनाई है।।



डॉ. विवेक कुमार तिवारी
मऊ, उत्तरप्रदेश

प्रकृति और हमारा फ़र्ज़

पेड़ जितने हो सकें उतने लगाओ दोस्तों,
इस ज़मीं को फिर से तुम गुलशन बनाओ दोस्तों।

है हवा में ज़हर जो फैला, उसे कम है करना,
साफ़ साँसें अब ज़माने को दिलाओ दोस्तों।

बूँद पानी की बहुत ही क़ीमती है आज तो,
हर नदी और हर समंदर को बचाओ दोस्तों।

घर परिंदों का उजड़ने से बचाना है हमें,
काट कर जंगल न अपना घर सजाओ दोस्तों।

आने वाली नस्ल को देना है सुंदर एक जहाँ,
लाज़मी है फ़र्ज़ अपना अब निभाओ दोस्तों।



पूर्णिमा सुमन

गर्मी का प्रकोप

बढ़ते गर्मी का प्रकोप
पचास डिग्री के पार हुआ।
बिना एसी के
जीवन जीना दुश्वार हुआ।।

कटते पेड़ों के कारण
गर्मी दिन पर दिन
पैर पसार रही।
कूलर और पंखा भी
गर्मी के आगे लाचार हुआ।।

दस से चार घर में रहो,
सरकारी फरमान जारी है।
गर्मी इतनी बढ़ गई कि
घर में रहना लाचारी है।।

पेड़ों को काटकर
सड़कों का निर्माण हुआ।
विकास कार्यों के चलते
पेड़ों का लहूलुहान हुआ।।

सूख रहे ताल और तलैया
पशु-पक्षी सब व्याकुल हैं।
कटते पेड़ों के कारण
जीवन पर संकट भारी है।।

चंद पैसों के ख़ातिर
मनुष्य पेड़ को बेच रहा।
आने वाली अपनी पीढ़ी को
जलते आग में झोंक रहा।।

दीपक सिंह जिम्मी
खेवली, वाराणसी

शिरीष

पार्क में सैर करते हुए
आज शिरीष याद आ गया
देखकर पैरों से कुचला हुआ
शिरीष फूल
कभी कालेज मे पढ़ा था
शिरीष के फूल निबन्ध
मई, जून की गर्मी में
कालेज जाती सड़क पर
बिखरे पड़े रहते थे
शिरीष के फूल
कुचलते जाते वाहन
पैदल चलने वाले
बेरहमी से सब कुचल देते
जो गिरा वही कुचला गया
कोमल रेशे लेकर
खिलता शिरीष का फूल
भीषण गर्मी में तपता
आँधी झंझावत से टूट गिरता
अलग होने का दर्द
ज़िंदगी लुढ़क गयी है
संघर्ष की सड़क पर
रौंदते जा रही यातना
बाध्यता समय कालचक्र
बीतता जीवन
फिसलती ज़िंदगी
क्षितिज के उस पार
लुप्त हो गयी कहीं
शिरीष फिर मुस्कुरायेगा
रेशम से कोमल रेशे
केशों में ऊँगली फिरोती
नाजुक सी किशोर बाला
ब्याह दी जायेगी कहीं दूर
भूल जायेगी नज़ाकत
उलझा देंगे नये रीति रिवाज
वो लद जायेगी मर्यादाओं से
शिरीष फिर भी खिल उठेगा
गुज़रा मौसम फिर आने पर
पर वो लड़की
फिर ना खिलखिला पायेगी
पहले की तरह।



वी पी दिलेन्द्र
मानसरोवर जयपुर (राजस्थान)

ग्रीष्मा का क़हर

तपन वह भी गर्मी के मौसम की
सच करेला ऊपर से नीम चढ़ा,
ऐसे में अगर नवतपा आ जाए
हो जाए हाल भी बेहाल सबके
अमीरों के वातानुकूलित बंगले
ए.सी. व खस के परदे लगे कूलर
घर बैठे ही निपटाने हैं काम सारे
फ्रिज से आइसक्रीम, शरबत पीते।
गरीबों के टप्परों में पंखें नहीं हैं
गीले टाट में लिपटे पानी के मटके
ठंडा सा पानी, देता है थोड़ा सुकून
रोज़ी कमाने को, गर्मी में झुलसते हैं
इससे भले हरे-भरे, ये गाँव हमारे
नीम-पीपल की छाँव, कच्ची गलियाँ
मिट्टी लिपे आँगन वाले, खुले-खुले घर
ग्रीष्म की दुपहरी बन जाती शिमला
छाछ, पना, नींबू शर्बत पुदीने वाला
शीतलता प्रदान करने वाली ये मेहँदी
तालाब झरने नदी के सुखद किनारे
जेठ माह को सावन सावन बनाना है।



सरला मेहता
इंदौर

वृक्षारोपण

नेताजी को
पर्यावरण दिवस
पर जनता को
जागरुक करना था
यानि अपने
ओजस्वी भाषण
से उनमें जोश
भरना था
जन सैलाब देखते
हुए विशाल
मैदान की
तलाश थी
अब मैदान
कहाँ मिलते हैं
समर्थक मंडली
निराश थी
तभी एक
परम चेले को
एक उत्तम उपाय
सूझ गया
विधिक संरक्षण
की शर्त पर
नेताजी के कान
में उपाय बूझ गया
पाँच घंटों में
पचास मज़दूर
पाँच एकड़
जंगल काट गए
आलीशान मंच से
पर्यावरण प्रेमी नेताजी
वृक्षारोपण पर
ज्ञान बाँट गए।



ब्रजेंद्र शरण श्रीवास्तव 'मानव'
झाँसी (उप्र)

पर्यावरण विशेष

ग्रीष्म ऋतु

नीले आकाश की छत पर
आग का गोला उतर आया है
पृत्थ्वी पर झुलसाती तेज़ धूप
छितरी पड़ी है।

सूर्य का चेहरा गुस्से से
तमतमा कर लाल हो गया है
आज मौसम का भी मिज़ाज गर्म है
एक आग आसमां में है
और एक मेरे पेट में
मैंने हलक़ में पानी डालकर
पेट की आग बुझाने की कोशिश की है।

मौसम की गर्म साँसें
मेरा चेहरा झुलसा रही हैं
मैंने अपने चहरे पर क्रीम लगा ली
मानो आग पर पानी डाल कर
इसकी आँच कम करने की कोशिश की हो।

मौसम का पारा सातवें आसमान पर है
और धरती ऊपर टकटकी लगाए है
बादल भी रूठ गए हैं शायद
और सूर्य को रोकने वाला कोई नहीं।

कच्ची पगडंडियों पर चलते हुए
कभी हम तपती दोपहरी में
दरख़्तों के साए में बैठे हैं
अब पगडंडियाँ नहीं रहीं
पक्की सड़क हो गयी है
तपती दोपहरी में कोलतार की सड़क
पिघलकर बह रही है।

वाहनों की कतारें
चींटियों की तरह रेंग रही हैं
धुंए की चादर में सब ढक गया है
और मौसम का तापमान बढ़ रहा है।

दरख़्तों की जगह अब
सड़कें बन गयी हैं
और चारों तरफ नज़र आते हैं
कंक्रीट के जंगल
अंदर हवा ठंडी है
पर बाहर मौसम गर्म

यह गर्मी बाहर नहीं
हमारे भीतर है
इसी भीतर की गर्मी ने
बाहर की गर्मी को बढ़ाया है।

चारों तरफ आग ही आग है
और आग बुझाने को पानी भी नहीं
पहाड़ों पर भी अब सर्दी नहीं
पहाड़ों की जगह अब वहाँ
पत्थर के रिसोर्ट हैं।

ये कहाँ आ गए हम
जेठ की दोपहरी पहले भी थी
गर्म बयार तब भी थे
पर तब दरख़्तों के साये थे
जगह-जगह जलाशय थे

आज दरख़्त नहीं, सड़कें हैं
और कंक्रीट के जंगल हैं
हवा ठंडी करने की मशीनें हैं
धुंए उगलते वाहन हैं
बदन पे बहते पसीने हैं।

हम बन बैठे हैं कालिदास
काट रहे उसी दरख़्त को
जिस पर बैठे हैं हम।



जयप्रकाश अग्रवाल
ग्रेटर नोएडा

हथगोले सी धूप

आसमान से बरस रही है
हथगोले सी धूप।
किरणें क्रोधित हो कर अपना
बदल रही हैं रूप।।
पंखे, कूलर, ए.सी. सब
गर्मी में होते फेल,
आइस्क्रीम कुल्फी से भी ना
कसती कभी नकेल,
साधु संत कुटिया में तड़पें
राज महल में भूप।
आसमान से बरस रही है
हथगोले सी धूप।।
पिघल रहा डामर सड़कों का
जैसे पिघले मोम,
झुलस रही है धरती पूरी
झुलस रहा है व्योम,
धधक रहा ज्वाला-सा कण-कण
उबल रहा है कूप।
आसमान से बरस रही है
हथगोले सी धूप।।
पशु-पक्षी गर्मी से व्याकुल
व्याकुल हैं तालाब,
ढूंढ रहे हैं तरुवर छाया
छाया भी बेताब,
गर्मी से सुन्दर चेहरे भी
लगने लगे कुरूप।
आसमान से बरस रही है
हथगोले सी धूप।।
सबकी प्यास बुझाता केवल
ठंडा-ठंडा नीर,
और सुहाता सबके दिल को
शीतल-मंद-समीर,
लस्सी पीने से लगती थोड़ी
तबियत अनुरूप।
आसमान से बरस रही है
हथगोले सी धूप।।



राम नरेश 'उज्ज्वल'
लखनऊ

-बबिता उपाध्याय
रोहिणी, दिल्ली

पर्यावरण संरक्षण

भारतीय संस्कृति में आदि काल से ही पर्यावरण संरक्षण के लिए सराहनीय प्रयास किए गए हैं। हिंदू धर्म के कई व्रत-त्योहार पेड़-पौधों पर ही आधारित हैं, जैसे वट सावित्री व्रत, तुलसी पूजा, पीपल पूजा, छठ पूजा आदि। हमारे ऋषि मुनि हवन, यज्ञ, मंत्रोच्चारण आदि करके वातावरण और पर्यावरण को सुगंधित और रोगों से सुरक्षा प्रदान करते थे। पवित्र ग्रंथ रामायण में रघुपति राम माता सीता की खोज ख़बर पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों से कितने करुणा भरे स्वर से पूछते हैं।

''श्यामा हिरनी तू ही बता दे तेरे जैसी आँखें श्याम'' उस समय ऐसा लगता है मानो सारा पर्यावरण ही उनके दुख में डूब गया हो। उनसे एकाकार हो गया हो। समय का पहिया घूमता गया और एक नया परिदृश्य सामने आ गया। वर्तमान में जनसंख्या बढ़ने के कारण जंगल के जंगल कटने लगे। पशु-पक्षी बेघर हो गए हैं। पेड़ काटना समान्य-सी बात हो गई है। यहाँ तक कि जो मुर्गा सुबह बांग देकर सबको उठाया करता था वह पता नहीं कहाँ ग़ायब हो गया है। चिड़िया जिसकी मीठी चहचहाहट हमारे कानों में मीठा अमृत उड़ेल देती थी वो चिड़िया भी आज दुर्लभ हो गई है। भौतिक सुखों और आधुनिकीकरण के पीछे भागता हुआ मानव आज अपने हाथों से ही अपने पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहा है। वह भूल गया है कि प्रकृति हमारी सहचरी है, हमारी मित्र है। आजकल आए दिन भूकंप आना, बेवक्त की बरसातें, जलवायु परिवर्तन में अनियमितता आदि पर्यावरण संरक्षण ना करने का ही परिणाम हैं। यहाँ तक कि हम सभी में बढ़ता तनाव, अधीरता, गुस्सा, अकेलापन आदि मानसिक तनाव हमारे द्वारा किए गए पर्यावरण के दोहन का ही परिणाम है। हम भूल गए हैं कि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने में हमारा ही नुकसान है। जो पर्यावरण अनादि काल से हमें सुरक्षा प्रदान करता रहा है हम अपने उस मित्र को कैसे भूल सकते है। हमें आज और अभी से यह प्रण लेना चाहिए कि हम अपने पर्यावरण को बचाने में ऐड़ी-चोटी का ज़ोर लगा देंगे। अधिक से अधिक पेड़ लगाकर हरियाली को कायम रखेंगे। पर्यावरण को स्वच्छ रखेंगे। सभी लोगों को प्रेरित करेंगे कि वे पर्यावरण संरक्षण के लिए कमर कस लें। जन्मदिन, वर्षगांठ आदि पर उपहार के रूप में पौधे दे कर नई शुरुआत कर सकते हैं। घरों तथा विद्यालयों में बच्चों को पेड़-पौधों का धार्मिक तथा वैज्ञानिक महत्व बताकर आरंभ से ही पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक किया जाना चाहिए।

नदियों की पूजा करने के नाम पर उन्हें गंदा नहीं करना चाहिए।

पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों के संरक्षण की ज़िम्मेदारी हम मनुष्यों की ही है। अगर ऐसा ना हुआ तो वह दिन दूर नहीं जब यह पृथ्वी एकदम बंजर और वीरान हो जाएगी जिसमें ना ही पक्षियों के मीठे स्वर होंगे और ना ही पेड़ों की हरियाली। ऐसी भयावह स्थिति से बचने का एकमात्र उपाय है- पर्यावरण संरक्षण।

''पेड़-पौधे हैं मित्र हमारे
देते हमें उपहार ढेर सारे।
ये हैं पर्यावरण की शान
इनको बचाना है पुनीत काम।
इनकी सुरक्षा है ध्येय हमारा
इनका संरक्षण हमारा नारा।''



लघुकथा

-साधना शर्मा
गुड़गाँव, हरियाणा



परोपकार का फल

गर्मी धीरे-धीरे बढ़ रही थी। अभी तक जो हवा सुखद लग रही थी, अब वह लू में बदल रही थी। नल से निकाला हुआ पानी भी पीने में ठंडा नहीं लग रहा था। और इस पानी से प्यास नहीं बुझ रही थी।

श्यामा अपने परिवार के साथ सोनपुर गाँव में रहती थी। उसका पति हरिया एक किसान था और उसके तीन बच्चे थे। दो पुत्र एवं एक पुत्री। पुत्री राखी सौतेली बेटी और बच्चों में सबसे बड़ी थी। वह घर के कामों में माँ की सहायता करती एवं छोटे भाइयों का भी ध्यान रखती थी।

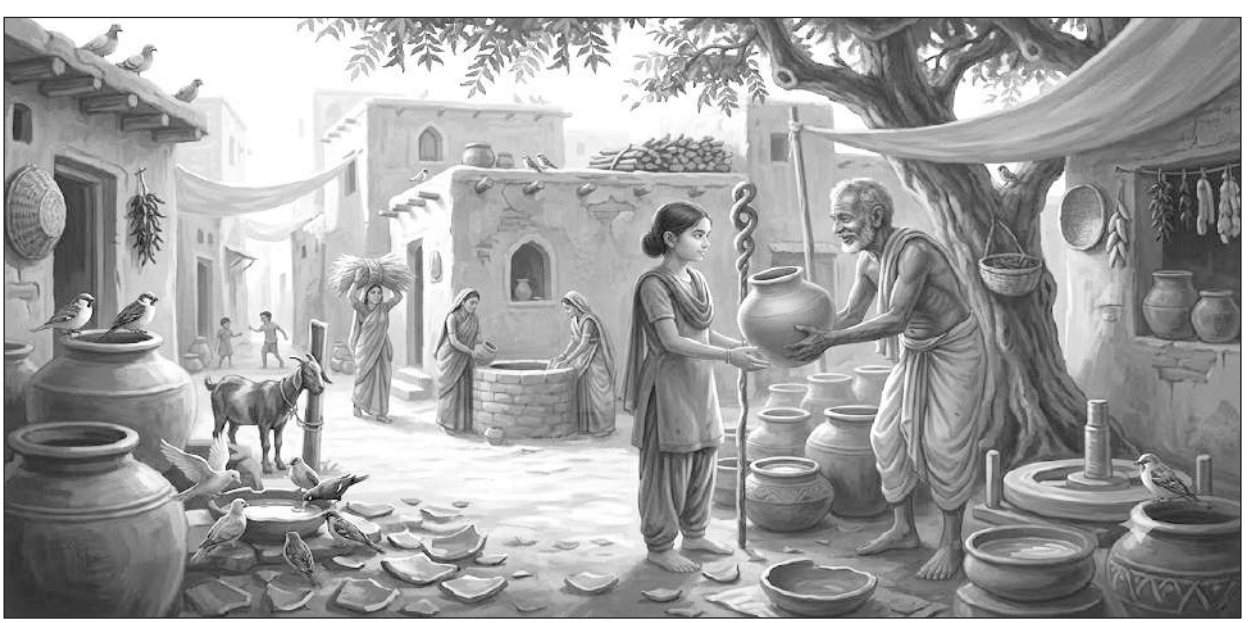
बढ़ती गर्मी को देखते हुए श्यामा ने राखी को एक मिट्टी का घड़ा लाने के लिए पैसे देकर, कुम्हार के घर भेजा। राखी घड़ा ख़रीद कर ले आई और उसमें पानी भी भर दिया। राखी के दोनों भाई बड़े शैतान थे। वे गुलेल से खेल रहे थे कि एक पत्थर घड़े में जा लगा जिससे घड़ा फूट गया और उसमें से पानी बहने लगा। उसकी सौतेली माँ ने जब यह देखा तो राखी की ख़ूब पिटाई लगाई और कहा, तुझसे कोई भी काम ठीक से नहीं होता। फूटा हुआ घड़ा ले कर आ गयी, पैसे बर्बाद कर दिये।

रोती हुई राखी, आँगन में लगे नीम के पेड़ के नीचे बैठ गयी और सोचने लगी नया घड़ा कैसे ले कर आऊँ? उसने देखा कि प्यासे पक्षी फूटे घड़े से बहते हुए पानी से अपनी प्यास बुझा रहे हैं। उसने फूटे हुये घड़े के दो भाग किये। उन दोनों भागों में पानी भरा। एक भाग घर के आँगन में और दूसरा घर के बाहर द्वार के पास रख दिया जिससे प्यासे पशु-पक्षी अपनी प्यास बुझा सकें।

राखी के पिताजी कभी-कभी कुछ पैसे दे देते थे जो वह अपनी गुल्लक में जमा कर लेती थी। उसने सोचा गुल्लक फोड़ कर उन पैसों से नया घड़ा ले आती हूँ। वह पैसे लेकर कुम्हार के पास गयी और बड़ी विनम्रता से एक और घड़ा देने के लिए कहा, यह भी बताया कि पहले वाला घड़ा फूटा हुआ था और इस बात के लिये उसकी माँ ने उसकी पिटाई भी की। राखी के रोते हुए, दुखी चेहरे को देख, कुम्हार को उस पर दया आ गयी। उसने बिना पैसे लिये नया घड़ा उसको दे दिया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पशु-पक्षियों पर दया करने का मधुर फल मिलता है।

जिस प्रकार राखी ने फूटे घड़े का सदुपयोग प्यासे पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने में किया और इस परोपकार का फल उसे एक नि:शुल्क, नये घड़े के रुप में मिला।



लघुकथा

-राम मूरत 'राही'
इंदौर म. प्र.



हौसले की मौत



''राम-राम दादा...।'' तपती दोपहरी में सिमेंट की बोरियों से भरे हाथ ठेले को तेज़ गति से धकाकर ले जा रहे परिचित बुजुर्ग से मैंने कहा। जो दो-तीन बार हमारे घर पर भी सिमेंट की बोरियाँ डालने आए थे। तभी से मेरी पहचान हो गई थी और अक्सर उनसे इधर-उधर आते-जाते समय मुलाकात होती रहती थी।

''राम-राम बेटा।'' उन्होंने मुस्कुराते हुए ठेला रोकते हुए जवाब दिया।

''और क्या हालचाल हैं दादा?''

''राम जी की कृपा से सब ठीक है बेटा... अपना सुनाओ?'' उन्होंने गर्दन पर टंगे गमछे से पसीना पोंछते हुए कहा।

'सब बढ़िया है दादा।''

''ठीक है बेटा! मैं चलता हूँ। बोरियाँ जल्दी पहुँचाना है।'' इतना कहकर वे चल दिये।

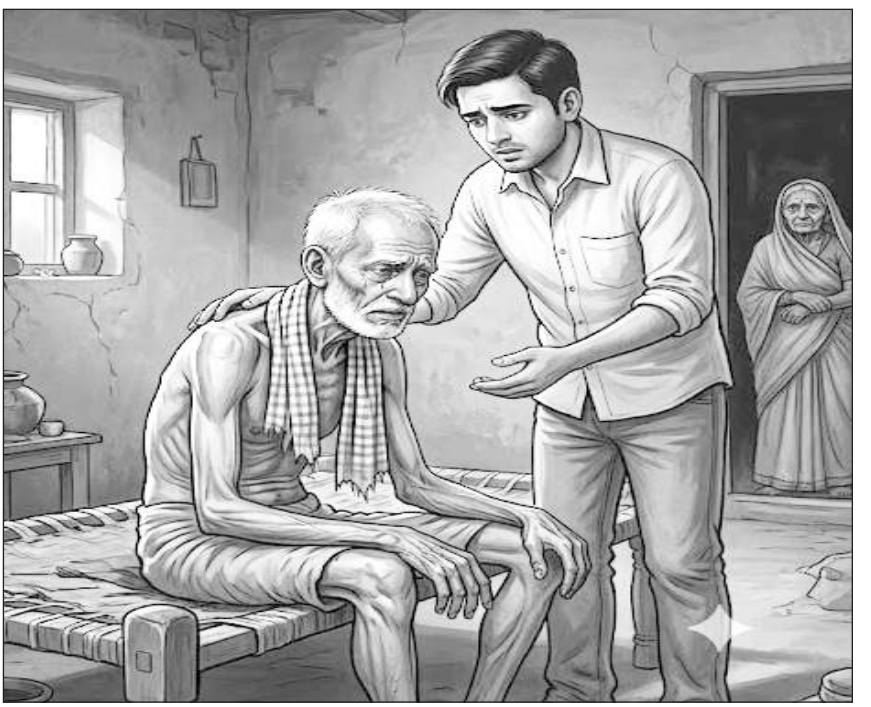
कुछ समय बाद जब वे फिर मिले तो वे बहुत कमज़ोर नज़र आ रहे थे।

मैंने उनसे राम-राम करने के बाद पूछा- ''दादा आपने अपनी ये हालत क्या बना रखी है। पहले जैसी चुस्ती-फुर्ती भी नहीं है?''

''बेटा, अब हौसला पस्त हो गया है।'' उन्होंने भरे गले से आँखों में आँसू लिए हुए बताया।

''ये क्या बोल रहे हैं आप?'' मैंने चिन्तित स्वर में पूछा।

''बेटा! तुम तो जानते ही हो कि मेरा एक ही बेटा है। कुछ दिन पहले मेरी पत्नी और बहू में एक छोटी-सी बात को लेकर बहस हो गई थी, इसलिए वह उसे लेकर अलग रहने चला गया। वो साथ था तो हम पति-पत्नी को बहुत हौसला था। वो हमारी ताकत था। उसके जाते ही सब खत्म हो गया।'' इतना कहकर वह आँसू पोंछते हुए बोले- ''चलता हूँ बेटा...।''



लेख

विश्व योग दिवस
के अवसर पर विशेष

-राजेश्वर गुप्त
आर्य नगर

योग, भगाए रोग

विश्व योग दिवस का अवसर सन्निकट है। इस दिवस को उत्साह पूर्वक मनाने के लिए पार्कों, मैदानों, सोसाइटीज़ तथा स्टेडियम में, योग कक्षाएं चल रही हैं। लोग सुबह-सुबह ही अपनी योगा मैट, पानी की बोतल और छोटा टावल लिए योग कक्षाओं में जाते हुए दिखाई देते हैं। लोगों के दिलो-दिमाग पर योग का जुनून सवार है। योगासन और प्राणायाम करने वालों का जोश देखते ही बनता है।



हठयोग ग्रन्थों में योगासनों को, आध्यात्म और शारीरिक दोनों के लिए लाभ प्रदान करने वाला बताया गया है। योगासन का तात्पर्य केवल मात्र शारीरिक मुद्रा नहीं है, बल्कि यह शरीर और मन दोनों को स्थिर करने वाली प्रक्रिया है। योगासन सदियों से हमारी संस्कृति का हिस्सा रहे हैं। गौरक्षा शतक और हठयोग रत्नावली में 84 आसनों का वर्णन मिलता है। जबकि भारत सरकार द्वारा की गई गणना के अनुसार, पारम्परिक ग्रन्थों में लगभग 900 आसनों की पहचान की गई है। कोई सामान्य व्यक्ति इतने आसन नहीं कर सकता है। अत: इतने आसनों में से अपने लिए उपयुक्त आसन चुनना बहुत ही कठिन कार्य होता है।

तब क्या करें...? उत्तर है.. ''सूर्य नमस्कार''।

सूर्य नमस्कार एक शक्तिशाली और प्राचीन योगाभ्यास है। यह 12 क्रमिक और श्रृंखलाबद्ध आसनों का समूह है। इसमें सभी आसन मिलकर एक चक्र बनाते हैं, जो पूरे शरीर को मज़बूती प्रदान करते हैं। सूर्य नमस्कार में श्वास लेने की एक विशेष लय का प्रयोग किया जाता है। गति और श्वास का यह संयोजन एक ऐसा प्रवाह उत्पन्न करता है, जो आपके सम्पूर्ण शरीर और मन को लाभ पहुँचाता है। सूर्य नमस्कार 12 अलग-अलग आसनों का एक सहज प्रवाह है, जो हमारे शरीर और मन के लिए सम्पूर्ण व्यायाम है। यह हमारी ऊर्जा को बढ़ाने, शरीर को लचीला बनाने और मानसिक एकाग्रता को तेज़ करने में मदद करता है। सूर्य नमस्कार सुबह सूर्योदय के समय, पूर्व दिशा की ओर मुँह करके, खाली पेट किया जाना चाहिए। शुरूआत में 4-5 बार से आरम्भ करके, धीरे-धीरे अभ्यास की संख्या बढ़ाते रहना चाहिए।

सूर्य नमस्कार के 12 चरण :

1. प्रणामासन : सीधे खड़े होकर, दोनों हाथों को वक्षस्थल के पास प्रणाम मुद्रा में जोड़ें। नेत्र बन्द रखें और उगते हुए सूर्य को प्रणाम करें।

2. हस्त उत्तानपाद : श्वास भरते हुए दोनों हाथों को ऊपर उठाएं और पीछे की ओर झुकें।

3. हस्त पादासन : श्वास छोड़ते हुए आगे झुकें और हाथों से अपने पैरों को छूएं।

4. अश्व संचालन : श्वास भरते हुए दाएं पैर को पीछे ले जाएं और बाएं पैर को घुटने से मोड़ें।

5. पर्वतासन : श्वास छोड़ते हुए बाएं पैर को पीछे ले जाएं और शरीर को उल्टा 'ट' आकार में उठाएं।

6. अष्टांग नमस्कार : श्वास रोककर घुटने, वक्ष और ठोड़ी को जमीन पर टिकाएं।

7. भुजंगासन : श्वास भरते हुए वक्षस्थल को आगे-ऊपर की ओर उठाएं।

8. पर्वतासन : श्वास छोड़ते हुए फिर से नितम्ब को ऊपर उठाएं। ताकि उल्टा 'ट' आकार फिर से बन जाए।

9. अश्व संचालनालय : श्वास भरते हुए दाएं पैर को आगे, अपने हाथों के मध्य में लाएं। बाएं घुटने को फर्श पर टिकाएं।

10. हस्त पदासन : श्वास छोड़ते हुए बाएं पैर को भी, दाहिने पैर के पास आगे लाएं।

11. हस्त उत्तानपाद : श्वास भरते हुए हाथों को ऊपर उठाएं और पीछे की ओर झुकें।

12. प्रणामासन : श्वास छोड़ते हुए सामान्य स्थिति में आएं।

सूर्य नमस्कार में 12 आसनों के साथ 12 विशेष मन्त्रों का उच्चारण भी किया जाता है, जो सूर्य देव के 12 दिव्य नामों पर आधारित हैं। प्रत्येक आसन के लिए एक अलग मन्त्र निर्धारित है। सूर्य नमस्कार के 12 मन्त्र इस प्रकार हैं...

1. ओउम् मित्राय नमः।
2. ओउम् रवये नमः।
3. ओउम् सूर्याय नमः
4. ओउम् भानवे नमः।
5. ओउम् खगाय नमः।
6. ओउम् पूष्णे नमः।
7. ओउम् हिरण्यगर्भाय नमः।
8. ओउम् मारीचये नमः।
9. ओउम् आदित्याय नमः।
10. ओउम् सवित्रे नमः।
11. ओउम् अर्काय नमः।
12. ओउम् भास्कराय नमः।

सूर्य नमस्कार एक सम्पूर्ण व्यायाम है। इसको नियमित रूप से करने से मानसिक एकाग्रता बढ़ती है, मांसपेशियां मज़बूत होती हैं, शरीर की मुद्रा में सुधार होता है और लचीलापन बढ़ता है। अन्ततः सूर्य नमस्कार सम्पूर्ण शरीर को आरोग्य, शक्ति और ऊर्जा प्रदान करता है।

क्या आप तैयार हैं, विश्व योगदिवस में सहभागिता के लिए?



लेख

एक पाती स्वयं के नाम

प्रिय सखी लता,

अरे कौन?

हाँ, आज मैं खुद को ही पत्र लिख रही हूँ, चाहती तो खुद से बात भी कर सकती थी। बात करने की कोशिश भी की फिर लगा क्यों न खुद से खुद की बात को पत्र में लिख डालूँ। सुनो, पिछले 26 वर्षों से मैं केवल एक माँ थी। इस पूरी दुनिया में केवल एक छोटा सा कोना मेरे पति, परिवार और घर का था। बाकी सारा बड़ा हिस्सा तो बेटे के नाम था। कभी-कभी लगता पति, परिवार और घर मेरी ज़िम्मेदारी है इसलिए निभा रही हूँ, पर बेटे को तो जैसे अपनी हर साँस में जीती हूँ, मुझे लगता है संसार की सभी माँएं ऐसी ही होती हैं, ऐसे ही करती हैं।

पर सुनो, अब मैं अपने बेटे का हिस्सा कम कर रही हूँ, और उस हिस्से को बहू को सौंप रही हूँ, ताकि वह भी मेरे बेटे को उतना ही प्यार करे और उसको अपना बना पाए और उतना उसमें समा जाए, जैसे मैं अपने बेटे की दुनिया में अब तक थी। मैं बड़े प्यार से संभाल के साथ अपने अधिकार क्षेत्र में बहू का प्रवेश कर रही हूँ, ताकि वह एक अच्छे पति और अच्छे पिता को पा सके, मैं केवल यह आशा नहीं कर रही कि वह अच्छी पत्नी बने, अच्छी बहू बने। मैं सोचती हूँ, कि पहले उसे एक बहुत प्यार करने वाला पति मिले उसके अधिकारों में ख़ुशी की सहभागिता वाली सास मिले फिर अच्छी पत्नी और अच्छी बहू तो मुझे मिल ही जाएगी।

मैं सोचती हूँ कि 'माँ' का अर्थ होता है बाँटना और बँटना मैं 'स्वयं' को अपनी बहू संग बाँट रही हूँ, मैं पीछे हो रही हूँ, ताकि वह अपने पति के साथ खड़ी हो सके। 'मैं' कमज़ोर हो रही हूँ ताकि मेरी बहू मेरे बेटे की पूर्णता बन सके।

मैं केवल अपनी संपत्ति ही अपनी बहू के साथ नहीं बाँट रही, मैं अपने अधिकार, अपना वर्चस्व और अपनी संपूर्णता अपनी बहू के साथ बाँट रही हूँ।

मेरा बेटा उसमें एक सशक्त अधिकार वाली और संपूर्ण पत्नी को पा सके इसलिए यह ज़रूरी है वह ख़ुशहाल और तनाव मुक्त जीवन जी सके। इसलिए 'मैं' स्वयं को अपनी बहू में हिस्सेदार बना रही हूँ।

हाँ, मैं जानती हूँ मैंने बहुत ख़ुशी से अपने दिल का हिस्सा उसे सौंपा है इसलिए उसे हिस्से में एक कोना वह मेरा भी रखेगी जहाँ मैं बहुत ख़ुश रहूँगी।

संसार की हर माँ जो बेटों की माँ है उसे ऐसा ही करना चाहिए। बहू के आने के पहले ही ख़ुद को समेट लेना चाहिए ताकि हमारे बच्चे हमारे घर में ख़ुश रह सकें। बहू भी अब मेरी ही बेटी है बेटे से अलग थोड़ी ही है।

हमारी बहू थी हमें उतने ही प्यार और अपनेपन से मातृ दिवस पर याद करें इसलिए यह ज़रूरी है हम अपने बेटे बेटियों से भी बस प्यार और अपनेपन की ही आशा रखते हैं तो बहू से केवल सम्मान और ज़िम्मेदारी की आशा क्यों करें? मैं जानती हूँ, प्यार और अपनापन आएगा तो सम्मान और आदर पीछे छूट जाएगा और कभी याद ही नहीं आएगा।

अरे! तुम्हें मतलब 'स्वयं' को पत्र इसलिए लिखा कि मुझे ये बातें याद रहें और मैं ख़ुद से ईमानदार बनी रहूँ।

अपनी बहू के हिस्से का अधिकार, उसकी ख़ुशी उसकी संपूर्णता में दखल ना दूँ, इसलिए इस पत्र को संभाल कर रखूंगी ताकि मेरे बेटे को कभी विभाजन चुनने की पीड़ा से न गुज़रना पड़े।

और हाँ, अंत में एक बात अभी मेरी बहू आई नहीं है।

पर उसके आने से पहले ही मैंने पल-पल को सजा लिया है, ताकि बेटे-बहू के स्वागत में फूलों भरा यह रास्ता उनके जीवन की ख़ुशियों की शुरुआत बने।



लता अग्रवाल
रिटा. एडिशनल कमिशनर
नगर निगम, इंदौर

आपबीती

आगरा की सैर

-महेंद्र तिवारी
नई दिल्ली

दिल्ली से आगरा तक का सफ़र हमने कितनी उम्मीदों, कितनी पुरानी यादों और किस क़दर उमड़ते उत्साह के साथ तय किया था, यह शायद सिर्फ हम दोनों के दिल ही जानते थे। शादी के बाद ज़िंदगी ज़िम्मेदारियों की ऐसी भूलभुलैया में उलझ गई थी कि कहीं चैन से साथ घूमने का, एक दूसरे की आँखों में देखकर सुकून के दो पल बिताने का मौक़ा ही नहीं मिला। पहले करियर की जद्दोजहद, फिर बच्चों की परवरिश और घर परिवार की अनगिनत उलझनें। इन सबके बीच हमारे अपने सपने जैसे कहीं बहुत पीछे छूट गए थे। बरसों बाद जब बच्चों की पढ़ाई थोड़ी पटरी पर आई और घर की ज़िम्मेदारियों से कुछ राहत मिली, तब मेरी पत्नी ने एक दिन अचानक चाय का कप थमाते हुए कहा था कि ज़िंदगी पता नहीं कब तक यूँ ही भागती रहेगी। उसने बड़ी मासूमियत से कहा था कि उसे एक बार ताजमहल देखना है। कहते हैं कि मोहब्बत वहाँ जाकर और भी गहरी लगने लगती है, और वह उस एहसास को जीना चाहती थी।

उसकी आँखों में उस वक़्त एक ऐसी ललक दिखी जिसे मैंने बरसों से नहीं देखा था। मैंने उसी पल अपने मन में यह तय कर लिया कि इस बार चाहे जो हो जाए, उसकी यह छोटी सी लेकिन बेहद ख़ास इच्छा मैं ज़रूर पूरी करूँगा। हमने अपनी यात्रा की पूरी योजना बनाई और सफ़र पर निकल पड़े।

सफ़र के दौरान वह पूरे रास्ते छोटे बच्चों जैसी उत्सुकता और ख़ुशी में डूबी रही। कभी वह कार की खिड़की से बाहर भागते हुए हरे भरे खेतों को निहारती, कभी आसमान में उड़ते परिंदों को देखती, तो कभी सड़क किनारे तेज़ी से पीछे छूटते पेड़ों को देखकर मुस्कुरा उठती। बीच-बीच में वह अचानक मेरी तरफ़ मुड़ती और पूछती कि सच बताइए, ताजमहल तस्वीरों से भी ज़्यादा सुंदर होता है क्या? मैं उसकी इस बालसुलभ जिज्ञासा पर हँस देता और उसे चिढ़ाते हुए कहता कि इतिहास गवाह है कि शाहजहाँ ने उसे अपनी बेपनाह मोहब्बत की निशानी के तौर पर बनाया था, अब इतना बड़ा बादशाह भला झूठ तो नहीं बोल सकता। मेरी यह बात सुनकर वह ज़ोर से खिलखिलाकर हँस पड़ती। उसकी वह हँसी मेरे लिए दुनिया की सबसे ख़ूबसूरत आवाज़ थी।

हमारी कार को आगरा शहर की सीमा में दाख़िल होते-होते शाम ढलने लगी थी। आसमान पर सूरज की धुंधली लालिमा तैर रही थी और शहर की संकरी सड़कें भारी भीड़, गाड़ियों के शोर और धुएँ से भरने लगी थीं। ट्रैफ़िक की वजह से हमारी रफ़्तार बहुत धीमी हो गई थी। हमें सबसे बड़ा अफ़सोस इसी बात का हो रहा था कि जिस ताजमहल को देखने के लिए हमने इतनी लंबी योजना बनाई थी, उसे देखने का समय लगभग ख़त्म हो चुका था।

मेरी पत्नी का खिलखिलाता हुआ चेहरा अचानक उतर गया। उसकी आँखों की चमक की जगह एक गहरी उदासी ने ले ली। उसने भारी मन से पूछा कि क्या इतनी दूर आकर भी हमें ताजमहल देखे बिना ही वापस लौटना पड़ेगा। मैं उसे इस तरह निराश नहीं देख सकता था। मैंने तुरंत माहौल को हल्का करने और उसकी उम्मीद जगाए रखने के लिए कहा कि अभी रात पूरी कहाँ हुई है, अगर आज ताज नहीं देख पाए तो क्या हुआ, चलो आज शाम को आगरा का लाल किला ही देख लेते हैं, कल सुबह इत्मीनान से ताजमहल देखेंगे।

हम जल्दी-जल्दी अपनी गाड़ी पार्क करके आगरा क़िले की तरफ़ निकल पड़े। रास्ते में पुरानी इमारतें, भीड़भाड़ वाले सजे हुए बाज़ार और देश-विदेश के पर्यटकों की आवाजाही देखकर आगरा शहर का एक अलग ही ऐतिहासिक रंग महसूस हो रहा था। हर तरफ़ एक अजीब सी चहल-पहल थी। लेकिन जब हम क़िले के विशाल मुख्य द्वार तक पहुँचे, तब तक सूरज पूरी तरह डूब चुका था और वहाँ एक गहरा सन्नाटा उतरने लगा था। लाल पत्थर के उस क़िले के भारी भरकम लोहे के दरवाज़े बंद हो चुके थे। वहाँ तैनात गार्ड ने हमें दूर से ही हाथ हिलाकर वापस जाने का इशारा कर दिया।

मेरी पत्नी ने अब पूरी तरह निराश होकर एक लंबी साँस ली और कहा कि लगता है आज हमारी क़िस्मत ही ख़राब है, जो

चाहा वह कुछ भी नहीं हो पा रहा। मैं भी भीतर से बहुत उदास हो चुका था, मगर उसे यह दिखाना नहीं चाहता था। मैं उसे सांत्वना देने के लिए कुछ शब्द ढूँढ ही रहा था कि तभी क़िले के बाहर खड़े दो तीन आदमी हमारी तरफ़ बड़े इत्मीनान से बढ़ते हुए आए। उनके चेहरों पर एक मुस्कान थी।

उनमें से एक ने बेहद मीठी आवाज़ में कहा कि साहब, लगता है पहली बार आगरा आए हो। मैंने बिना कुछ सोचे समझे बस हाँ में सिर हिला दिया। वह तुरंत एक गहरा अपनापन दिखाते हुए बोला कि कोई बात नहीं साहब, निराश क्यों होते हो, असली मज़ा तो आगरा में रात के वक़्त ही आता है। उसने आसमान की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि आज चाँदनी रात होनेवाली है, यहाँ पीछे से ताजमहल का नज़ारा ऐसा दिखता है कि लोग बस पलकें झपकाना भूल जाते हैं।

उसके दूसरे साथी ने बात को और पुख़्ता करते हुए आगे बढ़ाया और कहा कि हम लोग यहीं पर्यटन विभाग के लिए काम करते हैं। अगर आप दोनों चाहें तो हम आपको एक ऐसी बढ़िया जगह से ताज दिखा देते हैं जहाँ से पूरा नज़ारा साफ़ दिखता है और वहाँ भीड़भाड़ का भी कोई झंझट नहीं होगा।

उनकी बातों में इतना गज़ब का आत्मविश्वास और ऐसा पक्का भरोसा था कि हमें उनके इरादों पर ज़रा भी शक नहीं हुआ। उन्होंने ख़ुद को इतने स्वाभाविक और पेशेवर ढंग से हमारे सामने पेश किया कि हमें लगा सचमुच वे इस क़िले या पर्यटन विभाग से जुड़े हुए कोई कर्मचारी होंगे जो पर्यटकों की मदद करते हैं। मेरी पत्नी, जो ताजमहल न देख पाने की वजह से बेहद मायूस थी, उसने उम्मीद भरी नज़रों से मेरी तरफ़ देखा और धीमे से पूछा कि चलें क्या? मैंने आसपास नज़र दौड़ाई। वहाँ कुछ और स्थानीय लोग भी खड़े दिखाई दे रहे थे और सड़क पर गाड़ियाँ चल रही थीं। माहौल बिल्कुल सामान्य और सुरक्षित लग रहा था। मैंने उसकी ख़ुशी के लिए हामी भर दी।

उनमें से एक आदमी हमारे साथ आगे चल पड़ा। उसका शरीर दुबला पतला था, आँखों में एक अजीब सी चंचलता थी और होंठों पर एक मुस्कान लगातार बनी हुई थी। वह ख़ुद को एक बहुत जानकार गाइड बता रहा था। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे, वह आगरा और मुग़लों का इतिहास सुनाने लगा। वह कह रहा था कि साहब क्या आप जानते हैं कि शाहजहाँ ने अपने आख़िरी दिन इसी क़िले की खिड़की से ताजमहल को देखते हुए गुज़ारे थे। वह बड़ी नाटकीय आवाज़ में बता रहा था कि चाँदनी रात में ताज का रंग कैसे बदल जाता है, कभी वह दूध जैसा सफ़ेद दिखता है तो कभी हल्का नीला हो जाता है।

मेरी पत्नी उसकी ये सब बातें बड़े ध्यान और कौतूहल से सुन रही थी। वह सचमुच बहुत ख़ुश लग रही थी। शायद उसे यह महसूस हो रहा था कि हमारी यह अधूरी और निराश करने वाली शाम अब एक बेहद ख़ास और यादगार शाम में बदलने वाली है।

लेकिन धीरे-धीरे हम मुख्य और रोशन रास्ते से काफ़ी दूर होते चले गए। सामने एक पुराना और वीरान गार्डन जैसा इलाक़ा था। वहाँ लोगों की आवाजाही पूरी तरह से ख़त्म हो चुकी थी। रोशनी के नाम पर सिर्फ़ दूर जलती हुई स्ट्रीट लाइट की हल्की चमक थी। पेड़ों की लंबी और भयानक परछाइयाँ ज़मीन पर ऐसे फैली थीं जैसे कोई जाल बिछा हो। हवा में एक अजीब भारी सन्नाटा था जो दिल में अनजाना ख़ौफ़ पैदा कर रहा था।

एक पल के लिए मेरे मन में हल्की बेचैनी हुई। मैंने रुककर उस गाइड से पूछा कि अभी और कितना दूर चलना है? वह फिर से उसी मुस्कान के साथ बोला कि बस साहब, सिर्फ़ दो मिनट की बात और है, वहाँ सामने उस ऊँचे टीले के ऊपर से पूरा का पूरा ताज आपके सामने होगा।

हम चलते हुए एक ऊँचे टीले जैसी सुनसान जगह पर पहुँच गए। वहाँ दूर-दूर तक घना अंधेरा फैल चुका था। शहर की वह चहल-पहल और हल्की रोशनियाँ कहीं बहुत पीछे छूट गई थीं। अचानक मुझे महसूस हुआ कि आसपास का माहौल ज़रूरत से ज़्यादा शांत है। यहाँ तो परिंदों की आवाज़ तक नहीं आ रही थी।

तभी पीछे से सूखी पत्तियों के चरमराने और भारी क़दमों की आवाज़ आई। हमने चौंककर पीछे मुड़कर देखा। अंधेरे को चीरते हुए पाँच हट्टे-कट्टे आदमी हमारी तरफ़ तेज़ी से बढ़ रहे थे। उनके हाथों में मोटी और मज़बूत लाठियाँ थीं। उनके चेहरों पर एक क्रूर कठोरता थी और उनकी आँखों में किसी भूखे जानवर जैसी ख़तरनाक मंसूबे दिखाई दे रहे थे।

मेरी पत्नी बुरी तरह घबरा गई और सिहर कर मेरे बिल्कुल क़रीब आ गई। उसने मेरा हाथ बहुत ज़ोर से पकड़ लिया। कुछ ही सेकंड के भीतर उन पाँचों आदमियों ने हमें चारों ओर से घेर लिया। हमारे भागने का हर रास्ता बंद हो चुका था।

उन सब में से एक आदमी जो उनका मुखिया लग रहा था, वह सबसे अलग था। उसका क़द काफ़ी लंबा था, शरीर बहुत भारी था और उसके चेहरे पर घनी और ऊपर की तरफ़ उठी हुई मूँछें थीं जो उसे और भी ख़ूंख़ार बना रही थीं। उसकी लाल आँखें सीधे मेरी पत्नी के गहनों, हमारी जेबों और हमारे सामान पर टिकी हुई थीं। उसने बेहद कड़क और खुरदरी आवाज़ में हमसे पूछा कि कहाँ से आए हो तुम लोग।

मैंने अपने डर को छिपाते हुए किसी तरह जवाब दिया कि हम दिल्ली से आए हैं। वह एक क़दम और आगे बढ़ा और गुर्राते हुए बोला कि क्या करते हो तुम। उसकी उस आवाज़ में सवाल कम था और एक बहुत बड़ी धमकी ज़्यादा थी। उसी क्षण मेरे दिमाग में बिजली सी कौंध गई और मुझे पूरी तरह समझ आ गया कि हम एक बहुत भयानक जाल में फँस चुके हैं और ये लोग लूटपाट या उससे भी बुरा कुछ करने के इरादे से आए हैं।

मेरी पत्नी का हाथ मेरे हाथों में बुरी तरह काँप रहा था। डर के मारे उसके चेहरे का सारा रंग उड़ चुका था और उसकी साँसें अटक गई थीं। मेरे अपने मन में भी एक पल के लिए ख़ौफ़ की एक बहुत तेज़ लहर उठी। वह जगह इतनी सुनसान और वीरान थी कि वहाँ हमारी मदद करने वाला दूर-दूर तक कोई नहीं पहुँचने वाला था। अगर ये ख़ूंख़ार लोग हम पर हमला कर देते, तो शायद हमारी चीख़ें भी उस अंधेरे को पार करके सड़क तक नहीं पहुँच पातीं।

लेकिन मुझे यह भी पता था कि ऐसे विकट समय में घबराहट इंसान की सबसे बड़ी दुश्मन होती है। अगर मैं कमज़ोर पड़ा तो हम दोनों नहीं बचेंगे। मैंने अपनी पूरी मानसिक ताक़त को इकट्ठा किया और ख़ुद को बहुत मज़बूती से संभाला। मैंने बिना पलक झपकाए सीधा उस मूँछों वाले मुखिया की आँखों में घूरते हुए बेहद दृढ़ और सख़्त आवाज़ में कहा कि मैं फौजी हूँ।

मेरे मुँह से निकले इन शब्दों ने जैसे वहाँ के पूरे माहौल और हवा का रुख़ ही बदल कर रख दिया। उन सभी लोगों के चेहरों पर अचानक एक गहरा तनाव और असमंजस उभर आया। उस मूँछों वाले आदमी की आँखों में जो कठोरता और शिकार करने की चमक थी, वह कुछ ही पल में ढीली पड़ गई। उसने घबराहट में अपने साथियों की तरफ़ देखा।

पीछे खड़े एक लठैत ने थोड़ी सहमी हुई आवाज़ में धीमे से पूछा कि क्या सच में फौज में हो? मैंने उसी आत्मविश्वास और दृढ़ता के साथ अपना सीना चौड़ा करते हुए कहा कि हाँ मैं फौज में हूँ और अभी छुट्टी लेकर सीधा यहाँ आया हूँ।

वहाँ अगले कुछ सेकंड तक एक बहुत ही अजीब और भारी सन्नाटा पसरा रहा। हवा में जैसे तनाव जमे हुए बर्फ़ की तरह था। फिर मैंने देखा कि जो लोग अभी तक हमें अपना शिकार समझकर घेरकर खड़े थे, वे धीरे-धीरे अपने क़दम पीछे हटाने लगे। उनके चेहरे पर अब पहले जैसा वह ज़ालिम रौब बिल्कुल नहीं था।

मूँछों वाला आदमी बिना एक भी शब्द कहे वहाँ से मुड़ा और तेज़ी से अंधेरे की तरफ़ बढ़ गया। उसे जाता देख बाक़ी के चारों लोग भी बिना कोई आवाज़ किए उसके पीछे-पीछे अंधेरे में खिसकने लगे। कुछ ही पलों में वे सब उस भयानक सन्नाटे में कहीं गायब हो गए।

लेकिन वह गाइड, जो हमें इस मौत के कुएँ तक लाया था, वह अब भी हमारे पास खड़ा था। उसकी वह मुस्कान अब पूरी तरह गायब हो चुकी थी और उसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थीं। मगर वह अपनी जान बचाने के लिए बात को संभालने की कोशिश कर रहा था। वह हकलाते हुए बोला कि अरे साहब आप लोग तो बिल्कुल ग़लत समझ गए, यहाँ कोई ख़तरे वाली बात नहीं थी, हम तो बस आपको ताज दिखाने के लिए लाए थे, वे लोग तो बस ऐसे ही यहाँ से गुज़र रहे होंगे।

उसकी काँपती आवाज़ में उसका झूठ और उसकी घबराहट साफ़ दिखाई दे रही थी। तभी मेरी पत्नी ने मेरा हाथ और भी कसकर पकड़ लिया। उसकी उँगलियाँ बर्फ़ की तरह ठंडी पड़ चुकी थीं। वह रोने को हो रही थी और धीरे से फुसफुसाते हुए बोली कि यहाँ से इसी वक़्त चलिए, यहाँ एक पल भी रुकना बिल्कुल ठीक नहीं है। मैं भी अच्छी तरह समझ गया था कि अब इस धोखेबाज़ आदमी से बहस करने का मतलब है किसी नए ख़तरे को

दावत देना।

हम तुरंत वहाँ से मुड़े और बेहद तेज़ क़दमों से नीचे मुख्य सड़क की तरफ़ उतरने लगे। हमारे भीतर इतना ख़ौफ़ भरा था कि पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी। रास्ते में सूखी पत्तियों की हर आहट और हवा के झोंके पर ऐसा लगता जैसे कोई पीछे से फिर हमारे ऊपर झपटने आ रहा है। वह रास्ता जो आते वक़्त बहुत छोटा लगा था, अब ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। अंधेरे में हिलती हुई पेड़ों की परछाइयाँ भी अब किसी राक्षस जैसी डरावनी लग रही थीं। मेरी पत्नी पूरे रास्ते बिल्कुल चुप रही लेकिन उसकी साँसें बहुत तेज़ चल रही थीं।

कुछ दूर बेतहाशा चलने के बाद आख़िरकार हमें मुख्य सड़क की वह पीली रोशनी दिखाई दी। वहाँ पहुँचकर हमने देखा कि दो तीन ऑटो रिक्शा खड़े हैं और कुछ लोगों की चहल पहल है। वह रोशनी देखकर हमारी जान में जान आई और दिल की धड़कन थोड़ी सामान्य होना शुरू हुई। हम बिना एक पल गंवाए अपने कार से होटल की तरफ़ निकल गए।

कार में बैठने के बाद भी मेरी पत्नी का शरीर लगातार काँप रहा था। मैंने उसे अपने क़रीब किया और उसका हाथ मज़बूती से थाम लिया। कुछ देर बाद उसके सब्र का बाँध टूट गया और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। उसने रुंधे हुए गले से मुझसे पूछा कि अगर आज वहाँ सच में कुछ हो जाता तो हमारा और हमारे बच्चों का क्या होता।

उस ख़ौफ़नाक सवाल का मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मैं बस चुपचाप कार की खिड़की से बाहर भागते हुए अंधेरे शहर को देखता रहा। मेरे मन के भीतर बार-बार वही भयानक दृश्य किसी फ़िल्म की तरह घूम रहा था। वह सुनसान गार्डन, वह चमकती हुई लाठियाँ, हमें घेरते हुए वे भारी क़दम और वह ख़ामोश कर देने वाला मौत का डर।

उस रात होटल के सुरक्षित कमरे में पहुँचने के बाद भी हम दोनों में से किसी को पल भर के लिए भी नींद नहीं आई। बाहर सड़क पर गुज़रती हुई गाड़ियों की आवाज़ें रात भर सुनाई देती रहीं और हर छोटी सी आहट पर हमें ऐसा लगता जैसे कोई हमारे कमरे का दरवाज़ा खटखटा रहा हो या उसे तोड़ने की कोशिश कर रहा हो।

अगली सुबह जब आसमान में सूरज पूरी तरह से निकला और शहर में रोशनी फैली, तब जाकर हमारे मन का वह ख़ौफ़ थोड़ा शांत हुआ। हम आख़िरकार अपनी योजना के मुताबिक ताजमहल देखने गए। नीले आसमान के नीचे सफेद संगमरमर पर पड़ती हुई सुबह की वह सुनहरी धूप सचमुच बहुत अद्भुत और जादूई लग रही थी। वह नज़ारा स्वर्ग जैसा था, मगर पिछली रात का वह ख़ौफ़नाक डर अब भी हमारे भीतर ज़िंदा था।

मेरी पत्नी ने काफी देर तक ताजमहल की उस बेदाग़ ख़ूबसूरती की तरफ़ देखते रहने के बाद बहुत ही धीमे स्वर में कहा कि ज़िंदगी भी कितनी अजीब है, कभी-कभी इंसान दुनिया की सबसे नायाब ख़ूबसूरती देखने निकलता है और अचानक उसे दुनिया का सबसे घिनौना और डरावना चेहरा देखने को मिल जाता है। मैंने उसकी इस गहरी बात को सुना और पूरी तरह सहमत होते हुए बस चुप रहा।

आज इस भयानक घटना को बीते हुए कई साल हो चुके हैं। हमारी ज़िंदगी फिर से अपनी उसी पुरानी रफ़्तार से चल पड़ी है। लेकिन आज भी जब कभी उस रात का ज़िक्र होता है या वह मंज़र याद आता है, तो मेरी रूह भीतर तक काँप उठती है। मैं अक्सर अकेले में बैठकर यह सोचता हूँ कि अगर उस ख़ौफ़नाक पल में मेरे दिमाग में ख़ुद को फौज से जुड़ा हुआ बताने का वह विचार न आया होता, तो शायद वे बेरहम लोग हमें अपना बहुत आसान शिकार समझकर न जाने हमारा क्या हश्र करते।

उस रात मैंने मौत के डर को इतने क़रीब से नहीं देखा था, जितना यह महसूस किया था कि हमारे देश में भारतीय फौज की वर्दी सिर्फ़ एक कपड़ा नहीं, बल्कि आम नागरिकों के लिए अटूट विश्वास का दूसरा नाम होता है। यह वह सम्मान है, जिसके सामने अपराधी भी थर्रा उठते हैं। कई बार यही वर्दी किसी बेबस इंसान के लिए सबसे मज़बूत, सबसे अभेद्य ढाल बन जाती है।

कहानी



अनूठे प्रेम की अधूरी दास्तान

-डॉ. सूर्य प्रताप राव
मुंबई

हैं लफ़्ज़ अधूरे ही रह गए,

तेरे इन गुलाब से होंठों पर...

बरसात की हल्की फुहारें उस शाम शहर की गलियों को किसी अधूरी कविता की तरह भिगो रही थीं, और आसमान में बादल थे, लेकिन उनमें भी एक अजीब सी नरमी थी, जैसे वे भी किसी का इंतज़ार कर रहे हों! सड़क किनारे लगी पीली-पीली रोशनियाँ पानी में पड़कर ऐसे चमक रही थीं मानो धरती ने सितारों को अपनी बाहों में समेट लिया हो और हर जगह एक अलग ही ख़ूबसूरत सा नज़ारा दिख रहा था।

आरव उसी सड़क पर धीरे-धीरे चलता जा रहा था, उसके हाथ में एक पुरानी डायरी थी, जिसके हर पन्ने पर किसी का नाम लिखा था- 'पूनम'....

पूनम...

एक ऐसा नाम, जो उसके दिल की धड़कनों में बस चुका था!

आरव पहली बार पूनम से कॉलेज की लाइब्रेरी में मिला था! सफेद क़सीदेकारी सलवार-कुर्ते में बैठी वह लड़की किताबों के बीच किसी कविता की तरह शांत और ख़ूबसूरत लग रही थी! उसकी झील सी आँखें, ख़ूबसूरती और मुस्कान के साथ-साथ चेहरे पर एक अजीब सी मासूमियत थी, और कजरारी आँखों में ऐसा गहरापन कि कोई भी उनमें डूब जाए!

कजरारी आँखों में होता नशा, शराब से कहीं ज़्यादा यारों,

उसके बिना जीवन होता है अधूरा, यही बताना चाहता हूँ!

नशा झील सी आँखों में ही होता, यही बताना चाहता हूँ..

नशा झील सी आँखों में ही होता.....

यही बताना चाहता हूँ.....

यही बताना चाहता हूँ.....

उस दिन आरव सिर्फ उसे, उसकी ख़ूबसूरती और उसकी झील सी आँखों को ही देखता रह गया था, वह कुछ कहना चाहता था, मगर उसके होंठों तक आते-आते सारे शब्द न जानें क्यूँ खो गए!

जैसे, हैं लफ़्ज़ अधूरे ही रह गए...

उसके बाद यह सिलसिला रोज़ का हो गया, आरव हर दिन लाइब्रेरी जाने लगा! कभी किताब लेने के बहाने, कभी नोट्स पूछने के लिए, और कभी सिर्फ पूनम को एक झलक देखने के लिए!

इसी मुलाक़ात के बीच धीरे-धीरे दोनों की बातें शुरू हुईं!

पहले किताबों पर, फिर मौसम पर, और फिर एक-दूसरे की ज़िंदगी पर! पूनम को बारिश बहुत पसंद थी! वह कहती थी, बारिश में हर चीज़ सच्ची लगती है! लोग भी... और लोगों की भावनाएँ भी!

उसकी बातों को ध्यान से सुनते हुए आरव बस मुस्कुरा देता! क्योंकि वह भी जानता था, उसकी सबसे सच्ची भावना तो पूनम ही है!

एक दिन कॉलेज की कैंटीन में बैठे-बैठे पूनम ने आरव से पूछा, तुम हमेशा इतने चुप, गुमसुम से क्यों रहते हो?

आरव ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, कुछ बातें शब्दों से नहीं, दिल ही दिल और दिल से कही जाती हैं! पूनम उसकी तरफ बस देखती ही रह गई! उस पल दोनों की आँखों में कुछ अनकहा सा शब्द ठहर सा गया था!

आरव को मन ही मन अपनी लिखी एक कविता की कुछ लाइनें याद आ रही थीं....

दिल बेख़ौफ़, उसके ख़्वाबों का जहाँ था बसा लिया,

ये रूह मेरी न जाने, कब और कैसे उसमें ही खो गई!

कब और कैसे उसमें ही खो गई.....

समय बीतता गया, दोनों की दोस्ती अब एक-दूसरे की बातों, एहसासों में बदलने लगी थी! आरव हर रात अपनी डायरी में पूनम के लिए कुछ न कुछ कविताएँ लिखता! हर शे'र में बस उसका नाम होता, हर उसकी कविता पूनम की झील सी आँखें, उसकी मुस्कान, उसकी ख़ूबसूरती, उसके

गुलाबी होंठों और पूनम के घने काले बादलों सी ज़ुल्फ़ों पर और, आरव के हर ख़्वाब में बस एक ही चेहरा हमेशा होता, वो चेहरा बस पूनम का....

''चाँदनी रातों में मैं, तेरे ख़्यालों में खो जाता हूँ,

कभी ना कभी तू भी, मेरी यादों में खो जाएगी...

लेकिन आरव कभी अपनी मोहब्बत पूनम से कह नहीं पाया! उसे डर था, कहीं पूनम उसके प्यार का इज़हार करने पर उससे दूर न हो जाए!

चाहता हूँ वही मैं कहूँ, जो चाहता है उसका दिल,

है बेख़बर उसी के लिए, धड़कता मेरा भी दिल!

नज़रों से उसकी बरसे, वो चाँदनी सी झिलमिल,

हर रौशनी में दिखता, मुझको बस उसका दिल!

मुझको बस उसका दिल.....

एक शाम कॉलेज में सांस्कृतिक कार्यक्रम था, चारों तरफ रोशनी, संगीत और हँसी का माहौल था, पूनम पहली बार नीले रंग की साड़ी में उस कार्यक्रम में आई थी, उसे और उस पल उसकी ख़ूबसूरती को देखकर आरव कुछ पल के लिए ख़ुद को ही भूल गया! उस रात पहली बार उसने तय किया कि आज वह अपने दिल की बात पूनम से ज़रूर कह देगा!

कार्यक्रम के बीच में ही दोनों कॉलेज की छत पर कुछ पल के लिए घूमने चले गए, आसमान साफ़, नीला और उस नीलगगन में चमकता हुआ चाँद दिख रहा था, और साथ ही साथ आरव के सामने भी.... जगमगाती हुई पीली रौशनी के बीच नीली साड़ी में पूनम आरव के सामने खड़ी थी, ये महज़ संयोग था, या आरव की कल्पना का एक ज्वलंत उदाहरण, एक चाँद नीले आसमां पर तो एक चाँद आरव के सामने..... और साथ में बहती हुई हवा में हल्की सी ठंडक!

आरव के दिल में कुछ ख़्याल आया....

आरव का दिल, हर पल बस यही कहता उसे... कह दे अब तो कह दे....

तेरी झील सी नज़रों की बारिश में, है भीग गई मंज़िल,

हर बूंद में तेरी ही यादें, और हर धड़कन में तेरा दिल!

तेरे आने से लगे मुमकिन, मेरे जीवन की हर मंज़िल,

हर ख़ुशबू में होती हो तुम, और हर चाह में तेरा दिल!

तेरी ख़ूबसूरत हँसी का उजाला, मिटा देता अंधियारा,

तेरी मुस्कान और प्यार से, जुड़ा हुआ है मेरा ये दिल!

काफी देर बाद हिम्मत करते हुए आरव ने काँपती आवाज़ में कहा, पूनम... मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ। पूनम मुस्कुराई, और एक मुस्कान भरी अदा से कहा, कहो आरव! इतना कहना ही था कि आरव की धड़कनें तेज़ हो गईं, उसने पूनम की आँखों में देखा, लेकिन तभी अचानक तेज़ हवा चली, पूनम के काले घने बाल उसके चेहरे पर आ गए, वह उन ज़ुल्फ़ों को अपने चेहरे से हटाने में व्यस्त हो गई, और उसी पल आरव ये सब देखते हुए फिर चुप हो गया!

उसके शब्द फिर अधूरे ही रह गए....

तेरे इन गुलाब से होंठों पर...

पूनम ने हल्के से पूछा, क्या हुआ? आरव तुम रुक क्यों गए? कहो न मुझसे तुम कुछ कहना चाहते थे न?

आरव ने सिर झुका लिया, कुछ नहीं... बस कुछ नहीं...

उस रात आरव बहुत देर तक सो नहीं पाया, उसे लगा जैसे उसने ज़िंदगी का एक अच्छा और सबसे ख़ूबसूरत सा मिला हुआ मौका खो दिया!

लेकिन मोहब्बत कभी ख़त्म नहीं हुई!

अब आरव की दुनिया सिर्फ पूनम के इर्द-गिर्द घूमती थी! वह उसकी हँसी में अपनी ख़ुशियाँ ढूँढता, और उसकी उदासी में वो भी बेचैन हो जाता! ऐसा नहीं है कि ये सब आरव के साथ ही हो रहा था, उधर पूनम भी शायद उसके क़रीब आने लगी थी! वह आरव के बिना अपने आप को अब अधूरी सी मानने लगी थी!

अब पूनम भी आरव से कई बार, बार-बार घंटों बातें करती रहती, कभी अपने सपनों के बारे में, कभी अपने डर के बारे में तो कभी अपनी ज़िन्दगी के बारे में....

एक दिन पूनम ने आरव से कहा, अगर कोई सच में किसी से प्यार करे, तो क्या वो बिना कहे समझ सकता है? आरव ने

उसकी आँखों में देखते हुए जवाब दिया, सच्चा प्यार कभी भी शब्दों का मोहताज नहीं होता!

पूनम कुछ पल चुप रही, फिर मुस्कुराकर बोली, फिर तो कोई है... जो तुम्हें बहुत प्यार करता है! आरव का दिल ज़ोर से धड़क उठा, लेकिन वह फिर भी कुछ नहीं कह पाया! कहना चाहते हुए भी नहीं कह पाया क्योंकि पूनम ने भी आरव से अनायास ही बातों-बातों में कह दिया था और आरव को इसका ज़रा सा भी आभास नहीं था!

दिन गुज़रते गए, कॉलेज भी ख़त्म होने का समय आ गया!

विदाई समारोह की रात सब दोस्त हँस रहे थे, एक-दूसरे संग अपनी तस्वीरें खिंचवा रहे थे, लेकिन आरव के दिल में अजीब सी बेचैनी थी, उसे लग रहा था जैसे उसका कुछ अपना उससे दूर जा रहा हो!

पूनम उसके पास आई, आरव तुम इतने उदास क्यों हो? आरव ने कहा, कुछ खोने से भी कभी-कभी डर नहीं होता, पर एक रिश्ता होता है, जिसके ख़त्म होने से एक डर ज़रूर लगता है! उस रिश्ते के खोने का डर मैं महसूस कर रहा हूँ पूनम... .

आरव के इतना कहते ही पूनम की आँखें भी न जाने अचानक ही नम हो गईं. ...

कुछ रिश्ते कभी ख़त्म नहीं होते....

उस पल दोनों बस एक-दूसरे को देखते रहे! बहुत कुछ था जो वे एक-दूसरे से कहना चाहते थे, मगर शब्द फिर कम पड़ गए दोनों के होठों पर....

चाहकर भी नहीं दोनों एक-दूसरे से अपने दिल की बात नहीं कह सके... शायद शब्द नहीं रहे कहने को या, वक़्त नहीं मिला कुछ कहने को.....

कॉलेज के बाद दोनों की ज़िंदगी ही बदल गई!

पूनम अपने परिवार के साथ दूसरे शहर चली गई, और आरव अपने काम में व्यस्त हो गया! लेकिन आज भी आरव की हर सुबह पूनम के नाम से शुरू होती और हर रात और रातों की ख़्वाब उसी की याद में ख़त्म!

आरव आज भी कविताएँ लिखता था, और उसकी हर लिखी कविता में उस कॉलेज की पूनम की यादों से संबंधित जैसे, झील सी आँखें, उसकी ख़ूबसूरती, मुस्कान, गुलाबी होंठों, घने काले बादलों सी ज़ुल्फ़ों का समावेश ज़रूर होता!

हर लिखी कविता में आरव को एक उम्मीद होती, कभी न कभी पूनम आरव के दिल की बात समझ जाएगी.... और अपने से दौड़कर आरव से आकर कहेगी, चल पकड़ मेरा हाथ, बना हमसफ़र मुझे अपनी ज़िंदगी में....

यह कल्पना बस था, हक़ीक़त से कोसों दूर,

प्यार हक़ीक़त से होता, हमेशा सबसे ही दूर....

साल बीत गए,

एक रात अचानक आरव को पूनम का संदेश मिला,

आरव क्या तुम अब भी कविताएँ लिखते हो? उसके हाथ काँप गए, उसने जवाब दिया, हाँ, लिखता हूँ बस एक के लिए, वो भी बस तुम्हारे लिए, हाँ पूनम बस तुम्हारे लिए...

कुछ देर बाद पूनम का दूसरा संदेश आया, क्या मैं तुम्हारे लिखी हुई कविताएँ पढ़ सकती हूँ? आरव की आँखें अब भर आईं!

जिसका इंतज़ार उसने वर्षों से किया था, शायद वह पल सामने था! अगले दिन दोनों एक पुराने कैफे में मिले। बारिश फिर हो रही थी, पूनम पहले से ज़्यादा ख़ूबसूरत लग रही थी, लेकिन उसकी आँखों में अब भी वही मासूमियत और वही अपनापन था!

दोनों कुछ देर चुप बैठे रहे, आरव तो बस सामने बैठी हुई पूनम को एकटक हो निहारता रहा, उसकी ख़ूबसूरती, उसकी मुस्कान और उसके गुलाबी होंठों को, पर कहने को आरव के पास शब्द और हिम्मत अब भी कुछ नहीं था.... लगता रहा जैसे....

हैं लफ़्ज़ अधूरे ही रह गए.....

फिर पूनम ने धीरे से पूछा, आरव, तुमने कभी बताया क्यों नहीं? आरव हिचकिचाते हुए और धीरे से मुस्कुराया, फिर कहा, पूनम... हाँ पूनम मैं डरता था, कुछ दिल की बात ज़ुबां से कह कर कहीं तुम्हें खो न दूँ! एक ही पल में पूनम की आँखों से आँसू बह निकले! और धीरे से बोली, आरव, और मैं इंतज़ार करती रही, कि तुम ही कहो!

ये सुनते ही आरव स्तब्ध रह गया! पूनम ने अपनी पर्स से वह पुरानी डायरी

निकाली जो आरव ने कॉलेज के आख़िरी दिन गलती से उसे दे दी थी! मैनें तुम्हारी डायरी की हर कविता पढ़ी है आरव!

आरव की साँसें थम सी गईं, पूनम ने धीरे से कहा, आरव तुम्हारे अधूरे लफ़्ज़ जो तुम दिल से कभी मुझे कहना चाहते थे, वो मैं बहुत पहले समझ चुकी थी!

उस पल जैसे समय रुक गया, आरव की आँखों में ख़ुशी और दर्द दोनों थे! इतने सालों की प्यार भरी ख़ामोशी के बर्फ के पहाड़ जैसे आज पिघल रहे थे!

पूनम ने, धीरे से आगे बढ़कर आरव का हाथ थाम लिया,

और धीरे से कहा, कुछ प्यार पूरे नहीं हो सकते पर वो प्यार अधूरे होकर भी पूरे होते हैं, आरव!

बारिश की बूंदें खिड़की पर गिर रही थीं, कैफे में धीमा-धीमा ही संगीत बज रहा था, और पहली बार आरव ने बिना रुके अपने दिल की बात पूनम से उसकी झील सी आँखों में देखते हुए कही, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, पूनम!

पूनम भी मुस्कुरा दी, अब उसकी आँखों में वही चमक थी जिसे देखकर आरव पहली बार उसकी ख़ूबसूरती और उन झील सी आँखों में खो गया था!

मैं भी...आरव.... और आरव के दोनों हाथों को थामते हुए कहने लगी...

साथ गुज़ारे वो कुछ हसीन पल हम तुम बाग में,

वो कोयल, वो मैना बाग में अब भी आती हैं क्या,

सावन के उन दिनों में, घूमें साथ हम पहाड़ों पर,

क्या आज भी वो बरसात उस क़दर हो रही क्या....

सच-सच बताना कभी, मुझे याद करते हो क्या.....

मुझे याद करते हो क्या.....

उस पल लगा जैसे सारे अधूरे शब्द पूरे हो गए! सालों की एक-दूसरे से दूरी, ख़ामोशी और इंतज़ार एक छोटी सी मुलाकात और एक मुस्कान में सिमट गए!

अब आरव और पूनम दोनों अक्सर उसी कैफे में मिलते!

बारिशें अब भी होतीं, चाँद अब भी निकलता, कविताएँ अब भी लिखी जातीं, लेकिन अब उनमें वो अधूरापन नहीं था, और कहने को कोई शब्द जो अधूरा ही रह गया हो, नहीं था!

आरव जब भी पूनम को देखता, उसकी डायरी का पहला शे'र उसे अनायास ही याद आ जाता,

हैं लफ़्ज़ अधूरे ही रह गए,

तेरे इन गुलाब से होंठों पर...

लेकिन अब आरव मुस्कुरा कर अपनी उस कविता के आगे जोड़ देता,

मगर तेरी मोहब्बत ने...

मेरी हर ख़ामोशी को मुकम्मल कर दिया.....

थी ख़ामोशी, शब्द भी नहीं कहने को पास मेरे,

बिन कहे ही कुछ हम दोनों को यारा बस मिला दिया....

लेखक के अपने विचार...

सच तो यही है कि कुछ प्रेम कहानियाँ शब्दों में नहीं उतरतीं...

वे पूरी होती हैं एक-दूसरे के इंतज़ार में,

उन अधूरी मुलाकातों में,

उन अनकहे एहसासों में,

जो दिल चुपचाप उम्र भर महसूस करता रहता है!

इंतज़ार...

वो कुछ पलों का भी हो सकता है,

कुछ दिनों का, कुछ सालों का,

या फिर आख़िरी साँस तक चलने वाला एक अनंत सफ़र!

कभी-कभी दो दिलों का यूँ एक-दूसरे के लिए ठहर जाना ही सच्चे प्रेम की सबसे ख़ूबसूरत निशानी बन जाता है!

जहाँ मिलने से ज़्यादा ख़ास होता है किसी का हर हाल में लौट आने का यक़ीन!

क्योंकि हर प्रेम कहानी का अंत मिलन नहीं होता...

कुछ कहानियाँ इंतज़ार में ही मुकम्मल हो जाती हैं, और वही इंतज़ार समय के पन्नों पर एक अमर प्रेम का इतिहास लिख जाता है...!!!!!

विराम.....

लेख

जीवनशैली सादगीपूर्ण हो तभी जीवन सुखी रहेगा

आवश्यकताओं को कम करने से जीवनस्तर में सुधार किया जा सकता है। आधुनिक काल में जीवनशैली खर्चीली हो चली इस कारण मितव्ययता एक अच्छा उपचार हो सकता है।

पेट्रोल, डीजल और तेल की बचत देश की जनता को घरेलू आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाने में अच्छा कदम होगा। यह बात जो शीर्ष स्तर पर राजनीतिज्ञों द्वारा कही गयी है, सर्वथा उपयुक्त और राष्ट्रहित में है।

हालांकि राष्ट्रहित में सरकार को स्वयं अपने खर्चों में कटौती करना होगी। छोटी से छोटी सरकारी सभा में जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा लुट जाता है। सरकारी विशिष्ट अतिथियों के स्वागत एवं वाहनों के काफिलों में कटौती कर अनावश्यक खर्चों को तत्काल निषेध कर देना चाहिए जिससे देश की जनता पर सकारात्मक असर पड़े। कारों, मोटर साईकल का उत्पादन बेतहाशा बढ़ रहा है इसकी बजाय इलेक्ट्रिक आवागमन सुलभ व उत्तम क्वालिटी का निर्माण होना चाहिए।

मोटरसाइकिल, कारों, ट्रैक्टरों आदि की संख्या इतनी बेतहाशा बढ़ती जा रही है कि शहरों की सामान्य सड़कों पर जाम लगने लगे हैं। विकास के इस दौर में हर व्यक्ति की पहली आवश्यकता वाहन हो गया है। सड़क दुर्घटनाओं में प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। महँगे होटल, बार क्लब, हुक्का स्टॉल, मैरिज गार्डन आदि के बढ़ते चलन ने धनाढ्य लोगों के साथ मिडल क्लास लोगों को भी चस्का लगा दिया है जिससे क़र्ज़ बढ़ रहा है।

शादी की सामान्य रस्में जैसे हल्दी-मेंहदी, प्री-वेडिंग, व्यंजनों की होड़, वरमाला शो में मिडिल क्लास देखादेखी उनके जीवन भर की पूँजी लुटा रहे हैं जो पूंजी वर-वधू के जीवन में भविष्य निर्माण में सहायक होती।

हमारे पूर्वजों ने भी अभावग्रस्त जीवन जिया है उन्होंने अपनी सीमित आवश्यकताओं को बरक़रार रखा। जहाँ आवश्यकता कम होगी वहाँ समृद्धि रहेगी व शांति रहेगी। झगड़े नहीं होंगे दुर्घटनाएं नहीं होंगी, विदेशों पर निर्भरता कम होगी। कम पेट्रोल, कम तेल, कम चीनी, कम नमक, कम शक्कर, कम आडम्बर, कम प्लास्टिक, कम रसायन का प्रयोग करें जिससे हमारी सेहत भी ठीक रहे।

अस्तु आज आवश्यकता है कि हम आवश्यकताएं घटाएँ, फ़िजूलखर्ची कम करें जिससे समानता बनी रहे और धरती के संसाधन अधिक समय तक टिक सकें एवं भावी संतति को भी अधिक महँगाई से बचाया जा सके व उनका जीवन यापन सुलभ बनाने की कोशिश की जा सके।



जगदीश शर्मा 'सहज'
अशोकनगर, म.प्र.

लघुकथा

पुण्य

गंगा की सीढ़ियाँ उतरते समय मनोहर शास्त्री जी के मन में हज़ारों सवाल उछालें मार रहा था। परसों बेटी की शादी है और लड़के वालों की एक नई फ़रमाइश, दो तोले की सोने की चौन। वो भी दूल्हे को नहीं उसके बहनोई को। कहाँ से लाऊँ इतना पैसा, पंडिताई करके इतना पैसा कहाँ जुटता है। इसी उधेड़बुन में शास्त्री जी ने गंगाजल का आचमन करके डुबकी लगाई।

लेकिन डुबकी लगाते ही उनका सिर किसी दूसरे के सिर से टकराया, शास्त्री जी क्रोधित होकर बोले– ''दिखता नहीं है क्या?'' गंगाजी केवल तुम्हारी बपौती नहीं है। शास्त्री जी प्रतिउत्तर की तलाश में थे, लेकिन कोई होता तो ना जवाब देता। वो तो एक सुहागन स्त्री की लाश थी। सुहागन थी, सो सोलह श्रृंगार भी था। उनमें से कुछ गहने सोने के भी थे। शास्त्री जी की आँखों में चमक आ गई।

अगली डुबकी में उनके हाथों में सोने के गहने थे। अब शास्त्री जी का हृदय गंगा स्नान के पुण्य और कन्यादान के पुण्य के बराबर हो गया था।



रवि प्रकाश केशरी
वाराणसी

-डॉ. सावित्री मलिक

आभार

जब किसी भी साहित्यकार को सम्मान मिलता है तो वह सम्मान उसका अकेले का नहीं उसके पूरे परिवार, उसके गुरुओं और उन अनगिनत पाठकों का भी है जिन्होंने उसकी क़लम को प्रेरित किया।

विशेष रूप से बचपन में दादी नानी से जो कहानियाँ सुनी जाती हैं या साहित्यिक मित्रों का जो साथ हमें मिलता है ये सारी बातें हमारे शब्दों को पंख देती हैं।

साहित्य एक साझा धरोहर है जो समाज की धड़कन तो है ही साथ ही एक हमदर्द दोस्त भी है जो दर्द बाँटता है, आशा जगाता है।

साहित्य की यह दुनिया अकेले किसी एक के बूते नहीं चलती। यह सहयोग, प्रेरणा और समर्पण की साझा यात्रा है।

उन अनगिनत आत्माओं का हमें आभार प्रगट करना चाहिए जिनकी कहानियाँ, दर्द व सपने हमारे शब्दों को जीवंत करते हैं।

''अंधेरों में राह दिखाई और दी सपनों को उड़ान

उन सबके मार्गदर्शन के लिए सदा रहें हम कृतज्ञवान''

मुझे ''विक्रम शिला हिंदी विद्यापीठ'' द्वारा जो मानद सम्मन (Honorary Award) प्रदान किया गया, इस सम्मान के लिए मैं तहे दिल से आभारी हूँ और यह वादा करती हूँ कि मैं साहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों को मज़बूत करने का प्रयास जारी रखूँगी।



काव्यशैली साहित्य सम्मान समारोह -2026, दिल्ली

7 जून 2026 को 'काव्यशैली राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका' द्वारा आयोजित ''काव्यशैली वार्षिक साहित्य सम्मान समारोह 2026'' का भव्य आयोजन साहित्य सदन, मंगोलपुर खुर्द, दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। समारोह की अध्यक्षता देश के प्रसिद्ध शायर मंगल नसीम साहब ने की। अनिल वर्मा मीत के आथित्य में, काव्यशैली की एडिटर शैली भागवत 'आस' एवं सहसंपादक सावित्री मलिक ने मंच पर देश के



विभिन्न क्षेत्रों से पधारे काव्यशैली के सदस्य कवियों, साहित्यकारों को काव्यशैली साहित्य सम्मान 2026 प्रदान किये। संस्था द्वारा साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले साहित्यकारों को ''काव्यशैली साहित्य सम्मान 2026'' से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न एवं अंगवस्त्र भेंट किए गए। सम्मानित सदस्यों में वरिष्ठ कवयित्री सावित्री मलिक को काव्यशैली विशिष्ट साहित्य सम्मान-2026 एवं संगीता अहलावत, 'रुद्राणी' श्पूनम शर्मा, डॉ. साधना अग्रवाल, कमला सिंह ज़ीनत, तूलिका सेठ, कीर्ति रत्न, दास प्रेम, सुनीता भारल, डॉ. पुष्पा जोशी, लक्ष्मी कानोडिया, जय किशन जय, राजेश तंवर, सारिका प्रीतम, कवि अजय वर्मा साथी, डॉ. रश्मि गंगवानी, पुष्टि अग्रवाल, कवि संजय कुमार गिरी, डॉ. राजबाला राज जी, उमेश प्रसाद शर्मा, कवि वीरेंद्र सिंह कौशल, अनीता जैन को सम्मानित किया गया।

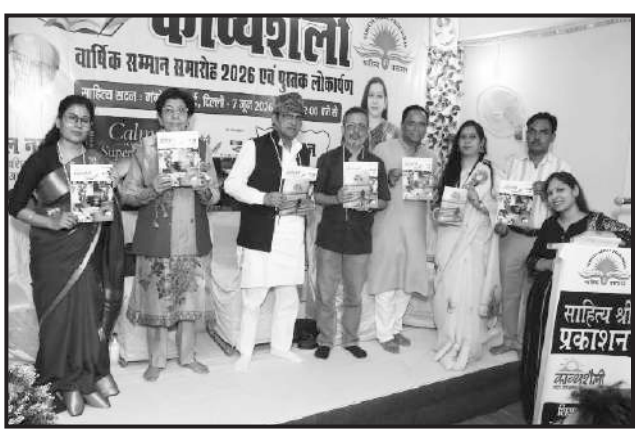
साहित्य सम्मान के साथ सारिका प्रीतम की किताब 'Calm is your superpower' (धैर्य की महाशक्ति) तथा शैली भागवत के ग़ज़ल संग्रह 'सहर मिल गई' का लोकार्पण किया गया। काव्यशैली के मई अंक का विमोचन भी इस अवसर पर किया गया। 'काव्यशैली' की एडिटर शैली भागवत 'आस' ने काव्यशैली की वार्षिक यात्रा पर प्रकाश डालते हुए इसके आगामी वर्ष के कार्यक्रमों पर चर्चा करते हुए कहा कि काव्यशैली मात्र एक पत्रिका नहीं बल्कि सार्थक साहित्य को सहेजने का प्रयास है। इसकी शुरुआत इसी उद्देश्य के साथ की गई कि साहित्य, शिक्षा के माध्यम से कला और संस्कृति को संरक्षित किया जाए। एक वर्ष के भीतर ही इसने देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में

अपनी जगह बना ली है। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से नवोदित, वरिष्ठ कलमकारों की रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं। अब तक लगभग 200 से अधिक रचनाकारों को पत्रिका में स्थान मिला है। वर्तमान में इसकी दिल्ली, उत्तर प्रदेश की इकाई के साथ इंदौर इकाई भी सक्रियता से काम कर रही है। साथ ही उन्होंने सारिका प्रीतम की कृति पर चर्चाकार के तौर पर इस पुस्तक को आधुनिक जीवन के लिए वरदान बताया है। जिसमें हमें प्रेरणादायक लेखों और उदाहरण के साथ यह सिखाया गया है, कि असली ताक़त बाहर के शोर को रोकने में नहीं, बल्कि अपने मन को शांत रखने में है।

प्रसिद्ध शायर मंगल नसीम साहब ने इस अवसर पर काव्यशैली के आयोजकों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि हमें अपनी लेखनी से सार्थक साहित्य का सृजन करते रहना चाहिए। इस कार्यक्रम में साहित्य प्रेमियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान बबिता उपाध्याय, डॉ. वीरेंद्र पाठक, गुंजन अग्रवाल, नरेन्द्र शर्मा, डॉ. गीतांजलि अरोड़ा, डॉ. शम्भू पवार, अंकित गोयल 'सावन', सुमन नागर सरल, श्री दास प्रेम, रामेश चंद्र, प्रत्यूष गौतम, इंद्रजीत सुकुमार, आदि कवियों एवं कवयित्रियों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं का काव्यपाठ कर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। गीत, ग़ज़ल, मुक्तक एवं समकालीन विषयों पर प्रस्तुत रचनाओं को उपस्थित जनसमूह ने भरपूर सराहना दी।

कार्यक्रम में सौहार्द, साहित्यिक संवाद और रचनात्मक आदान-प्रदान का सुंदर वातावरण देखने को मिला। उपस्थित अतिथियों ने काव्यशैली के साहित्य-संवर्धन के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए संस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का सुंदर संचालन नेहा जैन 'नेह' और काव्यशैली उत्तरप्रदेश इकाई प्रभारी 'रुद्राणी' पूनम शर्मा ने किया। अंत में आयोजक एवं संयोजक साहित्य श्री संस्थापक रामश्याम 'हसीन' ने सभी अतिथियों, सम्मानित साहित्यकारों, कवियों, श्रोताओं एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।









पुस्तक समीक्षा

स्त्री और प्रेम

पुस्तक का नाम : स्त्री और प्रेम
कृतिकार का नाम : डॉ. नीलिमा पाण्डेय
प्रकाशक का पता : साहित्य श्री प्रकाशन, नई दिल्ली



''विचार करने का एक क्षण! व्यक्त करने को अंजुरी भर शब्द!! और पढ़ने को एक गहरी साँस!!!''

डॉ. नीलिमा पाण्डेय जी द्वारा रचित क्षणिकाओं का यह अनोखा संकलन, प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, भारत द्वारा प्रकाशित हुआ है। जिसका मूल्य दो सौ रुपए है। पुस्तक का आवरण भी बहुत ही सुंदर है बिल्कुल शीर्षक को दर्शाता हुआ।

यह पुस्तक मैंने विश्व पुस्तक मेला 2026 के पुस्तक मेले से खरीदी थी। क्योंकि इस पुस्तक के शीर्षक ने मुझे आकर्षित किया ही था। साथ ही नीलिमा जी के स्नेह का भी बहुत योगदान रहा जिसके कारण विश्व पुस्तक मेले में उनके ना आ पाने के कारण मुझे उनकी पुस्तक खरीद कर उनको एक अनपेक्षित उपहार देने का विचार आया।

''स्त्री और प्रेम'' सचमुच यह नाम ही एक-दूसरे को अर्थ देने के लिए पर्याप्त हैं। इसमें संकलित 'क्षणिकाएं' जो अपने नाम से ही अपना अर्थ प्रकट कर रही हैं। जैसे ही आप पढ़ना शुरू करेंगे आपको वैसी ही तीक्ष्णता का अनुभव होगा जैसे आसमान में उमड़ आई घटाओं के बीच अचानक से बादलों को चीरकर कौंधती हुई बिजली जो अनायास ही सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लेती है।

इस पुस्तक की भाषा जितनी सरल है अर्थ उतने ही ज़्यादा गहरे हैं। बिना किसी जटिल अलंकार या भारी-भरकम शब्दों के जब किसी भी सामाजिक सच्चाई को सटीकता के साथ सामने रखा जाता है तो निश्चित रूप से उस अभिव्यक्ति का संयोजन पाठकों के हृदय पर गहरा प्रभाव छोड़ता है।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद मैं यह कह सकती हूँ कि इस पुस्तक में संकलित सारी रचनाओं के भाव ही उनके अलंकार हैं।

जिसमें तस्वीर के हर पहलू को बहुत ही बेबाकी से चित्रित किया है, नीलिमा पाण्डेय जी ने।

पहली रचना देखिए, जब कवयित्री कहती हैं-

''स्त्रियाँ ससुराल में निराश होती हैं तो
क्या मुँह लेकर नैहर जाएं,
यह सोचकर,
आत्महत्या कर लेती हैं।''

और तभी अन्तराल के बाद दूसरा सशक्त पक्ष भी सामने रख देती हैं जब वो कहती हैं-

''स्त्रियाँ बहुत सशक्त होती हैं,
यह बात,
पुरूषों से ज़्यादा
स्त्रियों को समझने की
आवश्यकता है।''

आत्मचिंतन की तरफ ले जाती यह रचना जहाँ एक तरफ समाज की उदासीनता को दर्शाती है, वहीं दूसरी तरफ स्त्री शक्ति को भी परिलक्षित करने की क्षमता रखती है।

स्त्री और प्रेम का विषय जितना भावनात्मक है उतना ही बहुआयामी भी। यह विषय स्त्री के संपूर्ण अस्तित्व, उसकी स्वतंत्रता, उसकी इच्छाओं और सामाजिक परिवेश में उसके संबंधों को भी गहराई से छूता है।

इस पुस्तक की हर रचना स्त्री के समर्पण के उस उच्च भाव को चित्रित करती है, जिसमें प्रेम स्त्री के लिए केवल पाने या खोने की अनुभूति नहीं है बल्कि यह उसके आत्म-स्वरूप से भी जुड़ा होता है। चाहे यह प्रेम एक बेटी के रुप में पिता से हो, बहन के रूप में भाई से हो, पत्नी के रूप में पति से हो या फिर प्रेमिका के रुप में अपने प्रेमी से हो। यह मुझे भी लगता रहा कि, सबके लिए समर्पित हो जाने वाली स्त्रियों को स्वयं से ही प्रेम करना याद क्यों नहीं रहा!

नीलिमा जी के शब्दों में-

''आधुनिक समय आने पर भी,
माताओं ने अपने बच्चों को

उन्हीं कोमल भावनाओं के साथ पाला,
जैसे वे आदिकाल में
स्नेह से पालती थीं
अपने बच्चे।''
वहीं अंतराल के बाद दूसरा भाव
लोग करते रहे
प्रेम के विषय में बातें
प्रवचन और बहस
एक स्त्री ने
कुछ कहा नहीं किसी से
प्रेम के विषय में
बस जी लिया प्रेम में।

संवेदना की इस सूक्ष्मता तक निश्चित रूप से वही पहुंच सकता है, जिसने प्रेम जिया हो। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने लंबे समय तक प्रेम को भी नियंत्रित किया है।

प्रेम को कर्तव्य के रुप में परिवर्तित कर स्त्री की भावनाएं सीमित कर दी गईं।

एक स्वस्थ प्रेम स्वायत्तता के साथ पहचान प्रदान करता है जिससे स्त्री कमज़ोर नहीं सशक्त होती है।

साहित्य और लोककथाओं में भी स्त्री का प्रेम अक्सर बलिदान के रूप में चित्रित होता रहा है।

हिंदी साहित्य में स्त्री और प्रेम के कई रूप देखने को मिलते रहे हैं-

कभी वह विरह में तड़पती नायिका रही, कभी विद्रोह करती हुई प्रेमिका। कभी अपने आत्मसम्मान के लिए प्रेम को छोड़ देने वाली स्त्री।

एक और रचना- 'गुड़िया के पैरों में, पैंजनी पहनाई गई'

यह कविता सीधा हृदय को भेदती है, जिसमें यह भाव स्पष्ट है कि पैरों में पैंजनी पहनाना एक बाहरी सज्जा और दिखावटी ख़ुशी का प्रतीक है, जो वास्तव में गुड़िया की उन बड़ी ख़ुशियों का बलिदान कराना चाहती है जिसकी वह हक़दार थी।

यह समाज का वह दोहरा रवैया प्रदर्शित करता है जिसमें समाज कई बार व्यक्ति को अपनी इच्छाओं का त्याग कर दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार जीने के लिए बाध्य करता है।

समग्र रूप से यह क्षणिका बल्कि मैं यह कहूँगी कि इस पुस्तक में रचित ऐसी अनेक क्षणिकाएँ हैं जो समाज में व्याप्त उस मानसिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं, जहाँ स्त्री के व्यक्तित्व और स्वतंत्र इच्छा को दबाकर, छोटी-छोटी ख़ुशियों के नाम पर समझौता करना सिखाया जाता रहा है। यह पाठक को सोचने पर मजबूर करती है और भीतर एक हल्की सी बेचैनी भी उत्पन्न करती है, जो कि एक सशक्त रचनाकार की पहचान है।

पुस्तक पढ़ते हुए आगे बढ़ने पर तस्वीर का एक और पहलू भी उजागर होता है जब, नीलिमा जी की अभिव्यक्ति में एक तरफ माटी सने पैरों से धान लगाती व गेहूँ काटती स्त्रियों का दिव्य स्वरूप है तो वहीं दूसरी तरफ हाथों में शीशे के ग्लास ले, चिकनी फर्श पर, फिसलती, गिरती स्त्रियाँ भी हैं जिनका क़द माटी सने पैरों वाली स्त्रियों के क़द के आगे बौना जान पड़ता है।

एक रचना में नीलिमा जी कहती हैं-

प्रेम को ही
सर्वोपरि मानती स्त्रियों ने
कभी परवाह नहीं की
परिवार, समाज
संसार और संस्कार की।

आधुनिक दृष्टिकोण में परिवर्तन के दौर को अपने अंदर समेट यह क्षणिका स्त्रियों की हर मनोदशा पर आत्म मंथन करने को प्रेरित करती है। जहाँ अब स्त्रियाँ भी अपनी स्वतंत्रता को अर्थ देते-देते उसका सही अर्थ भूलने लगी हैं।

मैं नीलिमा जी की इन भावनाओं से पूर्णत: सहमत भी हूँ आज के परिवेश में जिस तरह स्त्री और प्रेम दोनों ही आधुनिकता के धुंध से लिपटे पड़े हैं।

अंतत: मैं पल्लवी रानी एक पाठिका के रुप में ''स्त्री और प्रेम'' को लेकर यह ज़रुर कहना चाहूँगी कि हम इस पुस्तक को केवल भावनात्मक रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और व्यक्तिगत अनुभव के रुप में देखें। यह पुस्तक निश्चित रुप से बहुत ही सहजता के साथ अपने पाठकों को स्वयं से जोड़ लेती है। डॉ. नीलिमा पाण्डेय जी ने संवेदना के हर महीन धागे को बांध कर इतनी सुन्दरता से हर भाव को सशक्त रूप प्रदान किया है कि कोई भी पाठक ''स्त्री और प्रेम'' के स्पर्श से अछूता नहीं रह सकेगा।

आदरणीय नीलिमा पाण्डेय जी को हार्दिक बधाई और अनेक शुभकामनाएँ।



पल्लवी रानी

ग़ज़ल

कोई पूछे तो कैसी हैं परेशानियाँ
बोलती हैं बहुत उसकी ख़ामोशियाँ

हँसती आँखों में तुम ग़ौर से देखना
देखना कितनी छायी हैं विरानियाँ

ज़िन्दगी इक मुसलसल सज़ा बन गयी
कौन-सी हो गयीं ऐसी नादानियाँ

देख कर मुल्क का हाल ऐसा लगा
अकारथ गयीं सारी कुरबानियाँ

फूल सारे-के-सारे रहे मुंतज़िर
क्या पता, गयीं कहाँ, सभी तितलियाँ



सरोज कुमार वर्मा
मुज़फ्फरपुर, बिहार

बिखर रही है ज़िंदगी

बिखर रही है ज़िंदगी, पर उसकी हैवानियत कम नहीं होती है
तमाशबीनों की ख़ामोश बुज़दिली, अब कम नहीं होती है।

इंसानियत नीलाम है यहाँ ख़बरों की दुकानें सजी हैं,
हर कोई सौदागर है, जलती लाशों पर रोटियाँ पकी हैं।

दरिंदगी के साये में शामिल ये झूठी रानाईयाँ
चुप्पी की चादर में दफ़्न हैं, मासूम सच्चाईयाँ।

उठो! मौन की उस चादर को अब तार-तार कर दो
लहू से सनी स्याही को, इंक़लाब की धार कर दो।

जब तक ज़मीर ज़िंदा है, इंसानियत नहीं मरेगी
बिखरी हुई ज़िंदगी, फिर से सँवर कर निखरेगी।

कर्नल डॉ. राहुल शर्मा

सोचती हूँ क्या है ये जीवन....

नारी जीवन प्रतिपल प्रतिक्षण,
सोचती हूँ क्या है ये जीवन।
चिर वसुंधरा, निर्मल तपोवन,
या सदियों पुराना एक काल चिंतन।

तप्ति मरुभूमि, मदमस्त बयार,
ऋतु वसंत या सावन की फुहार।
ओस की बूँदें, अल्हड़ मझधार,
मांझी की कश्ती या चंचल पतवार।

नारी जीवन प्रतिपल प्रतिक्षण,
सोचती हूँ क्या है ये जीवन।
शृष्टि संचिका, सुवासित निहारिका,
या मनमोहक, उज्ज्वल चितवन।

कल्पना की उड़ान, नदी की उफान,
पल्लवित पुष्प या चिर परिचित मुस्कान।
भावनाओं का सागर, अमृत की गागर,
कोमल किसलय या रूह की पहचान।

नारी जीवन प्रतिपल प्रतिक्षण,
सोचती हूँ क्या है ये जीवन।
काल चक्र, विशाल वक्र,
एक पहलू करुणा, दूजा रुदन क्रंदन।

संघर्ष का दामन, तप्ति चिता,
क्या भाग्य में तेरे ओ पतिता।
सहनशीलता, मृदुभाषिणी,
तू वात्सल्य की कल-कल सरिता।

नारी जीवन प्रतिपल प्रतिक्षण,
सोचती हूँ क्या है ये जीवन।
भक्ति का रूप, शक्ति का स्वरूप,
गीता का सार या वैरागी मन।

दुर्गा का तेज या काली का वेग,
सावित्री का हठ या सती का त्याग।
मीरा की आसक्ति, राधा का प्रेम,
सबरी की भक्ति या सीता का त्याग।

नारी जीवन प्रतिपल प्रतिक्षण,
सोचती हूँ क्या है ये जीवन।
रूढ़ियों को तोड़ती, परम्पराओं को छोड़ती
या दुर्ग-दामिनी की गर्जन।

पूछता है शुक सारिका से,
खोल के अपना कोमल मन।
ऐ प्रकृति की सुंदरतम रचना,
क्या अब भी सोचे क्या है ये जीवन।





सारिका प्रीतम

विदेश की सैर

विदेशी धरती है विश्व की धरा
जिसके अनेकों रंग हैं उसकी शान

सबकी अपनी नई भाषा है, सबकी अपनी नई रीत,
कहीं अंग्रेज़ी, कहीं चीनी, कहीं स्पैनिश और अरबी,
कहीं फ्रेंच, कहीं रूसी, कहीं जर्मन और जापानी,
जापान के शिष्टाचार, अमेरिका की खाने के बाद की टिप,
वहीं रूस में पीले फूल हैं बड़े ख़राब, थाईलैंड ने भी दिए बंदरों को बुफ़े हज़ार।

सबके अपने नियम-कानून हैं, सबकी अपनी कड़त मेहनत,
सिंगापुर में चुइंगम और बर्मा में इंटरनेट है बैन,
यू.ए.ई में गाली देना और जर्मनी के ऑटोबान पर सैर है अवैध,
ऑस्ट्रेलिया में आईटी और जर्मनी में औद्योगिक क्षेत्र हैं मशहूर,
न्यूज़ीलैंड में कृषि का और अमेरिका की टेक्नोलॉजी है विख्यात।

सबके अपने-अपने ध्वज हैं सबकी अपनी नागरिकता,
मोज़ांबिक का AK-47 और ब्राज़ील के तारामंडल,
नेपाल का त्रिकोण में और कनाडा का मेपल का पात बड़ा ही अनूठापन दर्शाता है,
अमेरिका के अमेरिकन और फ्रांस के फ्रेंच,
कनाडा के कनाडियन और मिस्त्र के मिस्त्रवासी कहलाते हैं।

सबके अपने-अपने स्थल हैं सबकी अपनी जलवायु,
जापान में माउंट फूजी और दुबई में बुर्ज ख़लिफा,
इटली में वेनिस और वाशिंग्टन डीसी का वाइट हाउस है ख़ूब प्रसिद्ध,
डेथ वैली की गर्मी और अंटार्टिका की सर्द,
नॉर्वे के ही दिन हैं नॉर्वे की ही रातें ललित हैं।

सबकी अपनी बातें है सबके अपने राज़,
'परी' मगर सारे संसार में भारत सा नहीं है कोई भी राज,
जहाँ अनेक भाषाओं का मिलन हो,
जहाँ तीज-त्यौहार अनेक हों,
जहाँ की संस्कृति व रीत बेमिसाल हो,
वो कोई और नहीं पर हमारा हिंदुस्तान है।



पुष्टी अग्रवाल 'परी'
खुर्जा, बुलंदशहर

गीत

वो असर दे मेरे शब्दों में,
मेरे भावों में वो सार दे।
हे जगत की तारण-हारा!
मुझे भी भव से तार दे।।
अकिंचन में भटक रही
मिथ्या जगत की धारों में,
बेमकसद, वीरान सी है
ज़िंदगी त्योहारों में।
कुछ पा सकूँ, कुछ दे सकूँ
हर श्वास में वो बहार दे।।
हे जगत की तारण-हारा...

कर्म ने जिसको सताया
कुछ वक्त के जो मारे हैं,
तोड़ चुके हौसला,
जो मौत के सहारे हैं।
थाम लूँ हर अश्रु को,
हर स्वपन को सँवार दूँ,
आँखों में वो करुणा,
दिल में उफनता प्यार दे।।
हे जगत की तारण-हारा...

स्वयं की जीत और मद से
मुझे तू हार दे,
काट दूँ, हर भ्रम की बेड़ी
ज्ञान की वो तलवार दे।
पा सकूँ मैं तुझको और तू
मुझमें दिख सके,
थाम ले हर उठते क़दम,
हर ज़िंदगी सँवार दे।।
हे जगत की तारण-हारा!
मुझे भी भव से तार दे।



शीला चंदन
इन्दौर

गीत

कभी फुर्सत मिले तो देखना, कुछ नाम भी होंगे,
उसी में अश्क, सपने, प्रेम के पैग़ाम भी होंगे।
जिन्हें तुम भूल बैठे हो समय के शोर में शायद,
उन्हीं पन्नों में मेरे दर्द के आयाम भी होंगे।

तुम्हारे साथ बीते जो क्षण, मेरे त्योहार जैसे थे
जहाँ तुमने विरामों के कई संकेत छोड़े थे,
वहीं कुछ अनकहे रिश्तों के भी परिणाम भी होंगे।
कभी फुर्सत मिले तो देखना, कुछ नाम भी होंगे...

कई रातों ने मेरी आँख में सावन बसाए थे,
तुम्हारी याद के दीपक अँधेरों में जलाए थे।
स्याही में घुल गए होंगे धड़कनों के सारे ही क़िस्से,
उसी लहजे में भीगे कुछ मेरे अहसास भी होंगे।
कभी फुर्सत मिले तो देखना, कुछ नाम भी होंगे...

पलटकर देखना इस ग्रंथ को एक दिन अकेले में,
मिलूँगी मैं तुम्हें बिखरी हुई हर एक हवाले में।
कहीं कोरे से पन्नों पर तड़पती मौन रेखाएँ,
कहीं बिखरे हुए अरमान के अवशेष भी होंगे।
कभी फुर्सत मिले तो देखना, कुछ नाम भी होंगे...

न मैं शिकवा लिखूँगी और न कोई दोष ही दूँगी,
जो पाया है तुम्हारे प्रेम में बस स्वीकार कर लूंगी।
मगर यह सत्य है, मेरी कथा को पढ़ने वालों का,
तुम्हारे नाम से जुड़ते हुए संदर्भ भी होंगे।

कभी फुर्सत मिले तो देखना, कुछ नाम भी होंगे,
उसी में अश्क, सपने, प्रेम के पैग़ाम भी होंगे।
जिन्हें तुम भूल बैठे हो समय के शोर में शायद,
उन्हीं पन्नों में मेरे दर्द के आयाम भी होंगे।



'रुद्राणी' पूनम शर्मा
खुर्जा

एक बेटी की आवाज़

मैं कुछ कहना चाहती हूँ।
ज़रा ध्यान दीजिए,
अपने क़ीमती वक्त में से
दो पल मेरे लिए निकाल लीजिए।

मैं आपकी अपनी बेटी हूँ,
मेरी समस्या का समाधान कीजिए।
मैं एक लड़की हूँ,
मुझे सदा इस बात की सज़ा मिलती है।

कभी दहेज, कभी तेज़ाब,
कभी बलात्कार की आग में मेरी ज़िन्दगी जलती है।

कभी कर भ्रूण हत्या, ज़िन्दगी छीन ली जाती है,
कभी बलात्कार कर इज़्ज़त लूट ली जाती है।

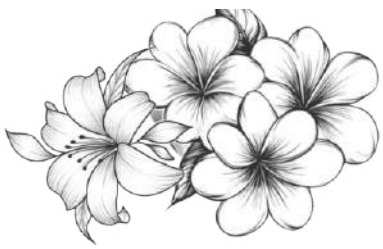
मन्दिर में देवी को चुनरी ओढ़ाने वाले,
कौरव बन भरी सभा में वस्त्र हरण करते हैं।

जिस नारी ने जन्म दिया,
उसी का जीवन दूभर करते हैं।

मैं पूछना चाहती हूँ,
क्या लड़की होना गलती है मेरी?
या गुनेहगार वे हैं,
जिनके कुकर्मों ने की मेरी ज़िन्दगी अन्धेरी।



अंकिता जैन अवनी
इंदौर



माँ की महिमा

ग़मों में अश्कों को आँखों से चुरा लेती है
बिना वजह ही वो सीने से लगा लेती है।
दूर से पास का अहसास कराने वाली
वो मेरी माँ है मेरी पीर चुरा लेती है।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं
छू लेंगे उसकी महानता मेरे शब्दों की औकात नहीं।

जब सुबह सवेरे उठते थे, माँ की सब्ज़ी बन जाती थी
ईश्वर मंदिर के आगे वो रामायण पढ़ती पाती थी।
नहाना धोना कब होता था ये हमें अभी तक याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं।

जब विद्यालय को जाते थे, बढ़िया तैयार वो करती थी।
हाथों में दूध थमा कर वो रोटी मक्खन से देती थी।
हम विद्यालय चले जाते थे, वो कब खाती ये याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं।

जब विद्यालय से आते थे, कपड़ों की तहें जमाती थी।
सब देखभाल कर कपड़ों में सुई धागा रोज़ चलाती थी।
अम्मा बाबा की टहल करे क्या-क्या सहती ये याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे इतनी तो मेरी बिसात नहीं।

इप्पी दुप्पी और गेंद तड़ी, हम छत पे खेलते रहते थे।
माँ ने क्या खाना बनाया है, ये बाट जोहते रहते थे।
आखिर में दूध बनाती थी, वो कब पीती ये याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं।



फिर आँख मिचौनी मौसम की होने लगती थी अजब बड़ी।
बिजली जाए छत पर जाओ बारिश आए तो अजब घड़ी।
माँ ऊपर नीचे भागती थी, कब सोती थी ये याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं।

माँ प्यार सभी को करती थी, कैसी भी विवाइयाँ भरती थी।
पापा को राज़ी रखती थी, सबकी सेवाएँ करती थी।
हर कड़ी में सुकूं पिरोती थी, कब रोती थी ये याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं।

माँ कल को तू यदि नहीं होगी, गलती पे कौन हमें डाँटेगा?
हम भाई बहन के बीच बनी खाई को कौन तब पाटेगा?
तूने प्यार में ऐसा पाग दिया, कब ख़फ़ा हुई ये याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं।

माँ तेरी जरावस्था को देख मेरा मन भीतर से रोता है।
तेरी जर्जर काया को देख विश्वास मुझे नहीं होता है।
तू थी सशक्त और ओज भरी, कभी जवां भी थी ये याद नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे, इतनी तो मेरी बिसात नहीं।

माँ ऐसी साधना करती थी घर की शोभा के क्या कहने।
पूनम की तरुणाई पाकर ममता के कमल के क्या कहने।
बिजली की रेखा गगन बीच तेरी महिमा का जवाब नहीं।
माँ की महिमा गाऊँ कैसे इतनी तो मेरी बिसात नहीं।
छू लेंगे उसकी महानता मेरे शब्दों की औकात नहीं।



डॉ. साधना अग्रवाल 'साधिका'
खुर्जा (बुलंदशहर) उत्तर प्रदेश

बाल कविता

आहिस्ता चल ऐ ज़िंदगी

अभी तो कई मसले
सामने हैं
कुछ ख़्यालात नये हैं
कुछ सपने अधूरे हैं
किसी की सरज़मीं
तलाशी है
किसी की मिट्टी अभी
नम है
किसी को पलकों पर
तौला है अभी
तो कोई मूँदें नयन में
है आहिस्ता
कहीं हवाओं का ये ज्वर
ले उड़े न ख़्वाब ये
अनकहे
अभी है इक चिंगारी सी
उठ जाएं नशीली
कहीं हवाओं से
मधुर संगीत लहरी
जो गूंजी है कानों में
ले उड़े न नशेमन मेरा
आहिस्ता आहिस्ता
हो जाए शाम वहीं
जहाँ सवेरा हो उनका
सफ़र कुछ रहगुज़र
हो आहिस्ता आहिस्ता
ज़माने भर से एक
अंजुरी पिएंगे जो
सागर से
आहिस्ता आहिस्ता
दवा वो बन जाएगी
मरहम लगेगा दिल
पर आहिस्ता
थोड़ा तो वक्त दे
सँभलने का
ये देखा स्वप्न न
टूट जाए कहीं
आहिस्ता आहिस्ता
पा जाऊँ मंज़िल
मिल जाए किनारा
बन जाएं सहारा
यूँ ही आहिस्ता आहिस्ता।



पूनम भटनागर

संकल्प

उठ-उठ गिर-गिर गिर-गिर उठ-उठ,
गिरि की गोदी से निकल-निकल।
मन में अविचल संकल्प लिये,
बहती नदिया कल-कल, कल-कल।।

पथ में काँटे या फूल मिलें,
चाहे पत्थर राहें रोकें।
चलती नदिया अपनी धुन में,
कितनी भी बाधाएँ टोकें।।

रुकती न कभी, थकती न कभी,
बढ़ती जाती हँसती गाती।
दायें मुड़ती, बायें मुड़ती,
आख़िर अपनी मंज़िल पाती।।

समझाती नदी सदा सबको,
तन मन में नई उमंग भरो।
श्रम से सब कुछ मिल जाता है,
तुम भी मन में संकल्प करो।।



त्रिलोक सिंह ठकुरेला
हाथरस (उ. प्र.)

अंदर कुटिल कलियुग

संवेदनाएं मर रही हैं
वेदना का युग,
मुख पे मीठे बोल हैं
अंदर कुटिल कलियुग।

सामने मीठे शहद से
पीछे करते वार,
जितना जो नज़दीक था
बरसाए ज़हरी प्यार,
आत्मा ही मर गई
उम्मीद क्या शुभयुग?

वेदना माथे पड़ी
संवेदनाएं गुल,
शेष अब भी है बहुत
तू ठीक कर ले भूल,
लौट आ युगबोध दे
ले चल सनातन युग।

मत करो सतयुग की बातें,
राम युग बदनाम,
बन सको तो लखन तुम
और भरत जैसे काम,
देती वो ही अमरता
आदर्श बन इस युग।

कामनाएँ हैं अनंत
और भावना विचलित
युग की धारा संग बहै
रीति वही प्रचलित,
सोच हो समभाव की
नवगति और नवयुग।

कुटिलता में तुम नहाए
कुटिल है हर चाल,
अति तो कुकर्म की
दिखता पतन है भाल,
अर्श से फिर फर्श पर
लाए समय हरयुग।





डॉ. हरीश व्यास
राजस्थान

अगर पिता होते...

अगर पिता होते...
तो शायद आज भी
घर के आँगन में
एक भरोसा टहलता होता।

जब भी थककर लौटता मैं
दुनिया की भीड़ और शोर से,
कोई बिना पूछे ही
मेरे चेहरे की उदासी पढ़ लेता।

अगर पिता होते...
तो मेरी हर छोटी जीत पर
उनकी आँखें चमक उठतीं,
और मेरी हर हार को
अपने कंधों पर रख लेते।

जब जेब में सपने ज़्यादा
और पैसे कम होते,
वो मुस्कुराकर कहते—
''चल बेटा, हिम्मत रख,
अच्छे दिन भी रास्ता ढूँढ ही लेते हैं।''

अगर पिता होते...
तो शायद आज भी
मेरे सिर पर रखा उनका हाथ
दुआओं का आसमान बन जाता,
और मैं उम्र भर
उस छाँव में निडर चलता।

अब जब कोई पूछता है—
''तुम इतने मज़बूत कैसे हो?''
तो आँखें नम हो जाती हैं,
क्योंकि उन्हें क्या पता,
मैंने मजबूरी को ही
अपना सहारा बना लिया है।

पिता के जाने के बाद
घर वही रहता है,
दीवारें भी वही रहती हैं,
पर जाने क्यों
हर चीज़ थोड़ी अधूरी लगती है।

त्योहार आते हैं,
दीये जलते हैं,
हँसी भी गूँजती है,
लेकिन किसी कोने में
एक ख़ाली कुर्सी
चुपचाप उदास बैठी रहती है।

अगर पिता होते...
तो मैं आज भी
कुछ ज़िम्मेदारियों से बच सकता था,
कुछ आँसू छिपाने की
ज़रूरत न पड़ती।

मैं फिर से बच्चा बन जाता,
उनकी उँगली पकड़कर
ज़िंदगी के कठिन रास्तों पर
बेख़ौफ़ चल पड़ता।

पर अब...
जब भी आसमान की ओर देखता हूँ,
लगता है जैसे
किसी सितारे में बैठकर
वो अब भी मुझे देख रहे हैं।

और मैं मन ही मन कहता हूँ—
''पिता जी,
आप होते तो अच्छा होता,
बहुत अच्छा होता...
क्योंकि आपके बिना
बड़ा तो हो गया हूँ मैं,
पर आज भी
ख़ुद को अनाथ-सा पाता हूँ।''

मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर

कमाल करती माँ

कभी न किसी से मलाल करती माँ।
हर घड़ी बस कमाल करती माँ।।

कोख में बेटियों को क्यों मारा।
अब यही सब सवाल करती माँ।।

हम तो कितने हैं दीन, दुनिया में।
प्यार से पर निहाल करती माँ।।

अपने सुख-दुख सभी भुलाकर के।
घर में सब का ख़याल करती माँ।।

ये तमस डर के भाग जाएगा।
खोल आँखें उजाल करती माँ।।

तल्ख़ियाँ दूर सब हो जाती हैं।
स्नेह से बोल-चाल करती माँ।।

जब बड़े मनमुटाव रिश्तो में।
गर्म जल सी उबाल करती माँ।।

घर में तकरार जिस तरह की हो।
पल में उसका निकाल करती माँ।।

मुझ को डांटे या घर को चमकाए।
जो करें बेमिसाल करती माँ।।

जब ठिठुरते हुए मुझे देखें।
झीन आंचल विशाल करती माँ।।

जिन पलों से 'नलिन' रहा वंचित।
उन पलों को बहाल करती माँ।।



नलिन खोईवाल
इंदौर

DLHIN/25/A0564

काव्यशैली

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

YouTube

हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े

साहित्य, कला, संस्कृति को समर्पित राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रतिमाह दिल्ली से प्रकाशित

- कविता, गीत, ग़ज़ल, काव्य की विभिन विधाओं की उत्कृष्ट रचनाओं का प्रकाशन
- शिक्षा, संस्कृति, कला आधारित कहानियों, लेख - आलेख
- 'बोलती किताबें' रीडर्स क्लब से बच्चों और बड़ों को जोड़ कर उनमें पाठन के प्रति रुचि जगाना
- वर्ष भर आयोजित साहित्यिक कार्यशाला, कार्यक्रमों में सहभागिता का अवसर
- साहित्य जगत में पहचान बनाने का अवसर
- किसी विशेष व्यक्तित्व पर विशेषांक प्रकाशन की सुविधा
- हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े



आइए शब्दों की इस पावन यात्रा में
साथ चले, साथ बढ़े

SUBSCRIPTION DETAIL

1500/-
वार्षिक

पत्रिका से जुड़ने एवं अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :
9425478866
+917982407065
ईमेल : kavyashaily049@gmail.com

काव्यशैली - जहाँ शब्दों में संस्कार, विचारों में विस्तार और भावों में सुंदरता है।

पाठक एवं लेखकों द्वारा प्राप्त

प्रतिक्रियाएँ

'काव्यशैली' (मई 2026 अंक) - एक साहित्यिक दृष्टि

साहित्य का अर्थ केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण होना है। 'काव्यशैली' पत्रिका का मई 2026 का अंक इसी उद्देश्य को चरितार्थ करता है। शिक्षा, साहित्य, कला और संस्कृति के त्रिवेणी संगम के रूप में यह पत्रिका निरंतर साहित्य प्रेमियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हो रही है।

यह अंक 'मातृ दिवस' विशेष है, जिसमें माँ के प्रति स्नेह, उनके संघर्ष और उनके व्यक्तित्व की विभिन्न छवियों को शब्दों में बहुत ही भावुकता और गहराई से पिरोया गया है। पत्रिका में कविता, लेख, लघुकथा और कहानी जैसी विधाओं का सुंदर समावेश है, जो पाठक को एक ही स्थान पर संवेदनाओं के विभिन्न आयामों से जोड़ता है।

इस अंक में मेरा लेख 'मातृत्व और चरित्र निर्माण' (पृष्ठ 24) भी सम्मिलित है। इस लेख के माध्यम से मैंने यह रेखांकित करने का प्रयास किया है कि किस प्रकार माँ का आचरण और संस्कार बच्चों के चरित्र निर्माण की नींव रखते हैं। एक माँ न केवल जीवन देती है, बल्कि वह बालक के भविष्य के निर्माण में एक मार्गदर्शक और प्रथम शिक्षिका की भूमिका निभाती है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि 'काव्यशैली' जैसे मंच ने इतने संवेदनशील और सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषय को अपने पृष्ठों पर स्थान दिया।

पत्रिका के प्रबंधन संपादक रामश्याम 'हसीन' जी और संपादक शैली भागवत 'आस' जी सहित पूरी टीम का प्रयास सराहनीय है। यह पत्रिका न केवल अनुभवी लेखकों को एक मंच देती है, बल्कि नए साहित्यकारों को भी प्रोत्साहित करती है। यह अंक उन सभी के लिए पठनीय है जो साहित्य के माध्यम से समाज और मानवीय मूल्यों को समझना चाहते हैं।

-डॉ. संगीता बिंदल

पूना, महाराष्ट्र

मातृशक्ति को समर्पित बहुत सुंदर अंक बना है काव्यशैली पत्रिका का। बहुत सुंदर साहित्यिक रचनाएं चयनित की गई हैं। मेरी कविता भी इस पत्रिका का हिस्सा बनी है। इसके लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ, पूरी टीम का।

-प्राची अग्रवाल

''काव्यशैली'' पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत सुंदर और मर्म स्पर्शी है। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। शैली जी, आपके स्तुत्य प्रयास ने गागर में सागर भरने का कार्य किया है। इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। सभी रचनाकारों ने अपनी ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और मार्मिक रचनाओं के द्वारा 'काव्यशैली' में चार चाँद लगा दिए हैं। मेरे लेख को पत्रिका में स्थान देने के लिए आभार। सभी रचनाकारों तथा शैली जी को बहुत-बहुत बधाई।

साभार

-बबिता उपाध्याय

काव्यशैली पत्रिका में मेरी लघुकथा के प्रकाशन का अवसर देने के लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। अपनी रचना को आपकी प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित देखकर अत्यंत प्रसन्नता और संतोष का अनुभव हुआ।

पत्रिका का स्वरूप बहुत प्रभावशाली है। इसमें कविता, कहानी, लघुकथा, लेख आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं को सुंदर ढंग से स्थान दिया गया है, जो इसे विशेष बनाता है। नए और स्थापित रचनाकारों को मंच प्रदान करने का आपका प्रयास सराहनीय है।

आशा है कि भविष्य में भी आपकी पत्रिका से जुड़कर अपनी रचनात्मक यात्रा को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता रहेगा।

आपकी पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं धन्यवाद।

-नेहा गुप्ता

दिल्ली

बहुत सुंदर, आकर्षक और रचनाकार के फोटो सहित और बहुरंगी बहुत सुंदर मनभावन आवरण पृष्ठ के साथ पत्रिका का ''ई-संस्करण'' प्राप्त हुआ।

आपके संपादकत्व में एक अखिल भारतीय स्तर की श्रेष्ठ पत्रिका में मेरी कविता का प्रकाशन मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

-अनिल ओझा

इंदौर

ये एक अकल्पनीय सा प्लेटफ़ॉर्म जिसे है देखा मैंने, जो साधारण से साधारण लेखक की लिखी रचनाओं को आम जन तक सीधे पहुंचाने का सुगम और सीधा संपर्क स्थापित कर रहे हैं।

दिल से साधुवाद

-डॉ. सूर्य प्रताप राव

काव्यशैली प्लेटफ़ॉर्म साधारण लेखक के द्वारा लिखी रचनाओं को आम जन तक सीधे पहुंचाने का सुगम प्लेटफ़ॉर्म है।

-दीपक सिंह

तेरी झील सी आँखों की जादूगरी, कमाल लगती है



-डॉ. सूर्य प्रताप राव
मुंबई

तेरी झील सी आँखों के जादूगरी भी, है कमाल लगती,
जैसे कोई ख़्वाब है मैनें देखा, एक ख़्याल सी लगती है।
यूँ झील सी तेरी इन आँखों में, मेरा दिल है डूबा जाता,
हर लम्हा तेरा चेहरा हो आईने में, मेरे सामने लगती है।

तेरे गुलाबी मीठे होंठों पर, लगती जैसे बहारें हैं ठहरीं,
हर पल हँसी उस पर तेरी ख़ूबसूरती, कमाल लगती है।
तेरी अदाओं पर जैसे, हर पल ये जो मौसम है बदलते,
जो चले संग दो क़दम मेरे तो, मेरी हमसफ़र लगती है।

तेरी इन नज़रों में कुछ है, जो इस दिल को भा जाता,
तेरा पलट के है देखना, इस दिल को घायल कर देता है।
जब भी हो मुस्कुराती, दिखे चाँद सी चमक चेहरे पर,
हैं काले केश और उस पर तेरी अदा, कमाल लगती है।

ये तेरा गुस्सा, रूठना और रूठ कर मान जाना कभी,
ये तेरा हर अंदाज़, तेरी हर बात मुझे अच्छी लगती है।
है तेरे बिना मेरा जीवन अधूरा, बिना तेल दीपक सा,
हो तेरी बांहों में मेरी ज़िंदगी, सच में ज़िंदगी लगती है।

है देखी बहुत ही जादूगरी, इस जीवन में मैंने भी यारों,
तेरी झील सी आँखों की ये जादूगरी, कमाल लगती है।

सदस्यगण


'रुद्राणी' पूनम शर्मा


कृष्णा मणि श्री


कमला सिंह 'ज़ीनत'


जय किशन 'जय'


सावित्री मलिक


हुमा ख़ातून


तूलिका सेठ


सुनीता भारल अनुश्री


पुष्पा जोशी


पुष्टि अग्रवाल


साधना अग्रवाल 'साधिका'


पूजा सक्सेना


लक्ष्मी कानोडिया


अजय वर्मा साथी


सोनिया अक्स


सारिका प्रीतम


डॉ. रश्मि गंगवानी


ख़ुश्बू जैन

E-mail : kavyashaily049@gmail.com Mob. : 79824 07065

काव्यशैली वार्षिक साहित्य सम्मान 2026









